॥ श्रीः ॥

भाषाटीकासहितो

जातिनिर्णयः ।

जिसको

वेद, वेदांग, इतिहास पुराणादिके भाष्य तथा टीकाकार भारतधर्ममहामण्डलके महामहोपदेशक जगद्विख्यात मुरादाबादनिवासी पं० ज्वालाप्रसाद मिश्रजीने संग्रहीत किया ।

उसको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासने

अपने " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " यन्त्रालयमें

मुद्रित कर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५७, शके १८२२.

कल्याण-मुंबई.

रजिष्टरी सब हक्क यन्त्राधिकारीने रक्खे हैं.

नूतन पुस्तकें

मरहटासरदार और रोशनआरा	
औरंगजेबकी पुत्रीका प्रेम	०-७
बारामासीया लावणीसंग्रह	०-५
जीवनचरित्र तुलसीदासजीका	०-८
गूजरगीत मंगल....	०-५
सूर्यकवच	०-१
शिवकवच	०-१
जगन्नाथमाहात्म्य छोटा....	०-६
संगीत सुधानिधि द्वितिय भाग	०-३
भक्तिविलास	०-२
वैद्यावतंस भाषाटीका	०-३
हितोपदेश भा० टी०	१-४
भोजप्रबंध भा० टी०	१-४
भैरवसहस्रनाम	०-२
संवत्सरफलदीपिका	०-३
काव्यमंजरी	१-८
नासिकेत भाषा वार्तिक....	०-४
संतानगोपालस्तोत्र	०-२
विवाहविचार	०-१
संकल्पकल्पना	०-८
चौतालचंद्रिका	०-४
समासकुसुमावलि	०-२
भूलोकरहस्य	०-४
धौम्यनीति भाषाटीका	०-४
मदनपालनिघंटु भाषाटीका	२-४
मूर्खशतक-निंदकनामा	०-४
आत्मबोध भा०टी०	०-४
श्रीपराशरस्मृति छोटी	०-३
षट्पंचाशिका भाषाटीका....	०-६
मुक्तिकोपनिषद् भाषाटीका	०-५
रामाश्वमेध अक्षर बडा मूल	२-८
ग्रहगोचरज्योतिष भा० टी०	०-२
जगन्नाथमाहात्म्य बडा ४९	
अध्यायका	१-४
राधागोपालपंचाङ्ग	०-१२
वियोगवैराग्यशतक	०-१
मैत्रीधर्मप्रकाश भाषाटीका	०-४
पूरनमलभक्तका सांगीत	१-४
भजनसागर ग्लेज	१-०
" रफ....	०-१२
मासचिंतामणि भा० टी०	०-३
श्राद्धविधान भाषाटीका....	०-६
केवल गीता भाषाटीका	
पाकेटबुक	०-८
तर्कसंग्रह भाषाटीका	०-६
स्वरतालसमूह (सितारका पुस्तक)	१-८
हारीतसंहिता भाषाटीका...	३-०
बृहदवकहडाचक्र (होडाचक्र)	
भाषाटीका	०-४
राजवल्लभनिघण्टु भाषाटीका	१-८
गीतामृतधारा भाषा	०-८
भागवत भाषा खुलापत्रा....	६-०
लघुजातक भा० टी०	०-८
पद्मकोश भा० टी०	०-४
बिरबर अकबरका उपहास....	०-८
आल्हारामायण (आरण्यकांड)	०-६
भोजप्रबंध भाषा	०-१२
गोविंदगुणवृंदाकर	१-०
दिल्लगीकीपुडिया९भाग प्रत्येक	
भागकी कीमत	०-२
सूर्यकवच भा०टीका	०-१
आदित्यव्रतकथा भा०टी०	०-२

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना, कल्याण-मुंबई.

भूमिका।

प्रियपाठकवृंद ! हमारे इस भारतवर्षमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णोंके सिवाय औरभी अनेक जाति निवास करती हैं जिनकी उत्पत्ति जाननेकी बहुत बडी आवश्यकता होती है, कि कौन जाति किस प्रकारसे चली है। बहुतसे पत्रभी इस विषयमें आते हैं, यह विषय एक बडा गम्भीर है परन्तु शास्त्रके अवलम्बनसे हमने मुख्य जातियोंका वर्णन किया है कि किसीको उच्च नीच कहना यह हमारा किसी प्रकारसेभी प्रयोजन नहीं है, परन्तु जैसा कुछ शास्त्रोंमें लिखा है वही प्रमाण हमने सब महाशयोंके आगे धर दिया है। हमारा यहभी विचार है, कि हम इस ग्रंथका एक भाग औरभी तयार करेंगे और उसमें कुछ विशेष विवरणभी लिखेंगे, इस कारण सब महाशयोंसे प्रार्थना है कि जिनके पास जिस जातिका प्रमाणसहित निर्णय विद्यमान हो, वे हमारे पास भेज दें तौ वह निर्णय दूसरे भागमें यथावत् प्रकाश कर दिया जायगा।

इस ग्रंथमें वेद शास्त्र स्मृति पुराणादिके जो प्रमाण लिखे हैं, वे अविकल अनुवादसहित लिखे गये हैं, तथा जनश्रुतिभी कहीं कहीं उल्लेखित की गई है, जहांतक हो सका है पुस्तक स्वच्छभावसे लिखकर पाठक महाशयोंके सामने उपस्थित की है। एक वार इस पुस्तकके पाठसेही परिश्रम सफल होनेकी आशा है।

यह ग्रन्थ सब प्रकारके स्वत्वसहित श्रीयुत गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी महाशयके करकमलमें समर्पित है कि, जिनके यशकी विमलपताका आजदिन समस्त भूमण्डलमें फहरा रही है। परमेश्वरसे प्रार्थना है कि वह परमोदार सर्वगुणसंपन्न सेठजीके मनोरथ सफल करें।

२।७।९८

पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र
दिनदारपुरा,
मुरादाबाद.

ईश्वरस्तोत्रम् ।

जगदीश विभो भुवनादिगुरो करुणामय शाश्वत शान्तिसरः । रचिताञ्जलिरार्तजनोऽहमिन प्रणमामि तवांघ्रिसरोजयुगम् ॥ १॥ त्वमनादिरजो जगदादिपिता त्वमनन्त ऋभो जगदन्तकरः । शरणागतदासमवेक्ष्य विभो कुरु पादरजःसु पवित्रतनुम् ॥ २ ॥ सततं कृतमेव मया कलुषं सुकृतिस्तु पितर्न कदापि कृता । अनुतापहुताशनतप्ततनुं कुरु शीतलमीश्वर शान्तिजलैः ॥३॥ जय विश्वपते परमेश पितः जय नित्यसुखप्रद शान्तिमय । गतिहीनमभाजनमल्पमतिमव कातरकिङ्करमादिविभो ॥ ४ ॥ तव पादयुगं सुपवित्रतमं भवसागरतारणदिव्यतरिः । परमार्थविवेकविहीनजनं परमेश्वर तारय पातकिनम् ॥ ५ ॥ सकलास्तु गुणास्तव पादभवा अगुणोऽसि तथाप्यखिलादिगुरो । गुणहीनमधन्यमपुण्यजनं परमेश पुनीहि नु पातकिनम् ॥६॥ तनु तावकपादसरोजमधु भवरोगविनाशनभेषजकम् । भ्रमरेण च येन निपीतमिदं सुरलोकसुखं नु किमिच्छति सः ॥७॥ जय विश्वपते जगदादिपितः जय नित्य निरामय नादि विभो । जय शङ्करकिङ्कर दुःखहर जय देव नतोऽस्मि विधेहि शिवम् ॥ ८ ॥

प्रस्तावना.

वेद स्मृति पुराण उपपुराणादि सबसेही यह सिद्धान्त निर्णीत हो चुका है कि मनुष्योंकी उत्पत्ति जातिभेदके साहित हुई है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णोंकी उत्पत्ति सृष्टिके प्रारंभमेंही हुई है, फिर बहुतकाल पीछे इन चारों वर्णोंके अनुलोम और प्रतिलोम क्रमसे परस्पर संयोगद्वारा संकरजातिका समूह प्रगट हुआ है। पृथ्वीमें जितनी जाति हैं, उनमें आर्यजाति सबसे अधिक प्राचीन है और इसी जातिकी प्राचीनता कथन करनेवाला ईश्वरप्रोक्त वेद अनादि गर्ज रहा है। वेद ईश्वरका ज्ञान है उसका कोई कर्ता नहीं, किंतु ब्रह्मादि महर्षि उसके स्मरण करनेवाले हैं।

न कश्चिद् वेदकर्ता च वेदस्मर्ता चतुर्मुखः ।
तथैव धर्मं स्मरति मनुः कल्पान्तरान्तरे ॥ १ ॥

इति पराशरसंहिता ।

परब्रह्मके विना और कोई वेदका कर्ता नहीं है। ब्रह्माजी केवल वेदके स्मरण करनेवाले हैं, इसी प्रकार कल्पान्तरमें मनुजी धर्मका स्मरण करते हैं ॥ १ ॥

अपि च—न हि वेदस्य कर्तारः स्मर्तारः सर्व एव हि॥२॥

इति जैमिनिः ।

जैमिनि कहते हैं वेदका कर्ता कोई ऋषि नहीं ऋषिगण पूर्वसंस्कारके वश केवल उसका स्मरण करते हैं। जिन महर्षियोंने तप कर वेदार्थका ज्ञान प्राप्त किया है, उनके नामसे मंत्र कहे जाते हैं॥२॥

तस्मादण्डादिनिर्भिन्नाद् ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ।
ऋचो बभूवुः प्रथमं प्रथमाद्वदनान्मुने ॥ ३ ॥

इति मार्कण्डेयपुराणम् ।

हे मुने! उस विदीर्ण किये अण्डसे बहिर्गत होकर अव्यक्तजन्मा ब्रह्माजीके मुखसे सम्पूर्ण ऋचा (ऋग्वेद) प्रथम निर्गत हुआ जो विश्वके आदि है ॥ ३ ॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू यदस्य तद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत ॥ ४ ॥

ऋग्वेद ।

सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मणजाति उसके मुखसे, राजा भुजासे, वैश्य जंघासे और शूद्र उसके चरणसे प्रगट हुए, इस प्रकार सृष्टिउत्पत्तिक्रममें चारों वेदोंमें यह मंत्र आया है ॥ ४ ॥

लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः ।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत् ॥ ५ ॥

इति मनुसंहिता ।

लोककी वृद्धिके निमित्त मुख, बाहू, जंघा और चरणसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चार वर्ण ब्रह्माजीने प्रगट किये । ब्राह्मणमें विद्या, क्षत्रियमें बल, वैश्यमें व्यापार पुष्टि और शूद्रमें सेवा स्वाभाविक है ॥ ५ ॥

मुखतोऽस्य द्विजा जाता बाहुभ्यां क्षत्रियास्तथा ।
ऊरुभ्यां च तथा वैश्याः पद्भ्यां शूद्राः समुद्भवाः॥६॥

इति भविष्यपुराणम् ।

भविष्यपुराणमें लिखा है कि ब्राह्मण उसके मुखसे, क्षत्रिय भुजासे, वैश्य जंघासे और शूद्र चरणोंसे उत्पन्न हुए हैं और जो इस समय जाति न मामनेवाले यह प्रमाण कहते हैं कि ॥ ६ ॥

न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदं जगत् ।
ब्रह्मणा पूर्वसृष्टं हि कर्मणा वर्णतां गतः ॥ ७ ॥

महाभारतीय शान्तिपर्व ।

वर्णोंमें कोई विरोध नहीं यह सब जगत् ब्रह्मसे युक्त है । प्रथम ब्रह्मासे सृजन किये गये और कर्मसे वर्णताको प्राप्त हुए हैं ॥ ७ ॥

यह श्लोक ब्रह्मसे उत्पन्न होनेके कारण सब वर्णोंकी एकता

करता है चाहे वे ब्रह्मके किसी अंगसे उत्पन्न हुए हों। केवल ब्रह्मसे उत्पन्न होनेके अंशमें तथा आत्मज्ञानपक्षमें 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' इस श्रुतिबलसे सब ब्रह्मरूप कथन किये हैं। लोकमें जब ब्रह्माजीने उनकी रचना करके उनके निमित्त कर्म बताया तब यथार्थरूपसे वे वर्णताको प्राप्त हुए, अथवा ब्रह्माजीने प्रथम सबको निर्माण किया है तथा वे सब पहले जन्मके कर्म अनुसार इस सृष्टिके आरंभमें ब्राह्मणादि वर्णोंमें जन्मे। यदि इसको कोई न माने तो इस प्रकार उत्तर है कि–

श्रुतिस्मृतिपुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते ।
तत्र श्रौतं प्रमाणं तु तयोर्द्वैधे स्मृतिर्वरा ॥ ८ ॥

इति व्याससंहिता ।

श्रुति स्मृति पुराणोंका विरोध जहां हो तो उसमें वेद प्रमाण माना जाता है। स्मृतिपुराणोंके विरोधमें स्मृति प्रमाण मानकर दूसरे वचनोंकी उपेक्षा की जाती है। वे वचन कहीं अन्य चरितार्थ होते हैं ॥ ८ ॥

अपि च–श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्म्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।
ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ ॥ ९ ॥

इति मनुसंहिता ।

वेदका नाम श्रुति और धर्मशास्त्रको स्मृति कहते हैं। सब विषयोंमें तर्कद्वारा इसकी मीमांसा करनी उचित नहीं, कारण कि इन्हींके द्वारा धर्म प्रकाशित हुआ है। सामवेदके ताण्ड्य महाब्राह्मणमें लिखा है कि ॥ ९ ॥

अङ्गादङ्गात्संभवासि हृदयादधिजायसे ।
आत्मासि पुत्रममृथाः स जीव शरदां शतम् ॥ १० ॥

ब्राह्मण ।

अर्थात् हे पुत्र! तू अंग २ से उत्पन्न होकर हृदयसे होता है,

साक्षात् आत्मरूप है मृत्युको प्राप्त न होकर सौ वर्ष जीतौ विचारा जा सकता है कि जब अंगअंगसे रचना होती है तौ पिताके गुणकर्मस्वभाव पुत्रमें अवश्य आवेंगे, इसमें संदेह नहीं । यदि कोई यजुर्वेदके मंत्रपर पहले तीन पदोंमें अलंकारकी कल्पना करें तो इस प्रकार अलंकारकी कल्पना नहीं हो सकती, कारण कि पुरुषसूक्तभरमें सृष्टिरचनाका प्रकार वर्णन है, सबकी उत्पत्ति लिखी है तो प्रसंगसे ब्राह्मणादि वर्णोंकीभी उत्पत्ति लिखी गई है । तथा यजु० का० १४ मंत्र २८ । २९ । ३० ।

तिसृभिरस्तु वत ब्रह्म सृज्यत ॥ २८ ॥
पञ्चदशभिरस्तुवत् क्षत्रमसृजत ॥ २९ ॥
नवदशभिरस्तुवत् शूद्राय विसृजेताम् ॥ ३० ॥

प्राण उदान व्यानसे स्तुति की ब्राह्मण जातिकी रचना की २८ । पन्द्रह भांतिसे स्तुति की क्षत्रिय जातिकी उत्पत्ति की २९ । दश हाथकी अंगुली और नौ छिद्रवर्ती प्राणोंसे युक्त हो स्तुति की तब वैश्य और शूद्र जातिकी उत्पत्ति की । यह मंत्रोंके मध्यभाग लिख दिये हैं । इन वचनोंसे प्रगट है कि जाति अनादिकालसे चली आती है । प्रत्यक्षमें देखा जाता है कि पिता माताके गुणकर्मस्वभाव पुत्रमें प्रायः सभी होते हैं, जिनका जन्म उच्च कुलमें हुआ है जिनके घरमें शास्त्रका अध्ययन वेदादिकका विचार होता है, उनका पुत्र स्वयंही उस कार्यमें संलग्न होता है । कारण कि उसके मस्तिष्कमें वह सब शक्ति समाई हुई है । स्वभावकी प्रेरणासे उसको स्वयं करने लगता है । कुलालका पुत्र पात्र निर्माणकी कर्तव्यतामें स्वयंही प्रवृत्त है, ब्राह्मण जिस प्रकार वेदादि शास्त्रका पारगामी हो सकता है, वैसी कोई जाति इस विद्याको प्राप्त नहीं हो सकती । क्षत्रिय जिस प्रकार प्रजारक्षा शूरता दाक्षिण्यादि गुणोंमें स्वभावसे प्रवृत्त होता है, इस प्रकार और जाति नहीं हो सकती । वैश्य स्वभावसेही व्यापार कुसीदीमें जैसा प्रवृत्त होता है इस

प्रकार अन्य जाति नहीं कर सकती । शूद्रको सेवाधर्म स्वभावसे प्राप्त है इस प्रकार अन्य जाति नहीं कर सकती । जब कि जिसके स्वभावमें जो प्राप्त है फिर उसको कौन अन्यथा कर सकता है ? भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने गीतामें कहा है ।

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥४२॥
शौर्य्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च क्षत्रकर्म स्वभावजम् ॥ ४३ ॥
कृषिगोरक्षवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।
परिचर्य्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ।
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ॥ ४४ ॥
अध्याय १८ ।

शम, दम, तप, पवित्रता, सहनशीलता, ऋजुता, ज्ञान, विज्ञान, आस्तिकभाव यह ब्राह्मणका स्वाभाविक कर्म है ॥ ४२ ॥ शूरता, तेज, धैर्य, चतुराई, युद्धसे न भागना, दान देना, ईश्वरभाव रखना यह क्षत्रियोंका स्वाभाविक कर्म है ॥ ४३ ॥ खेती, गोरक्षा, व्यापार यह वैश्योंका स्वाभाविक कर्म है । शूद्रका स्वाभाविक कर्म सेवा है । अपने २ कर्ममें स्थित रहनेसेही चारों वर्ण सिद्धिको प्राप्त होते हैं कारण कि पूर्वजन्मके कर्मसेही वे प्राप्त जातिमें जन्म ले आये हैं॥४४॥

यदि कहो कि ब्राह्मण मूर्ख हो तो उसे ब्राह्मण नहीं कह सकते तो यह तर्कभी उचित नहीं कारण कि खट्टे, पागले, सड़े आमको आम्र नहीं कह सकते बराबर कहते हैं । इसी प्रकार अपढ ब्राह्मणको मूर्ख कहते हैं, किन्तु उसकी ब्राह्मणजाति नष्ट नहीं हो सकती। जब कि पिताका रोग पुत्रको आक्रमण करता है, माताका भोजन किया अन्न दूधरूप होकर बालकको वैसा गुण देता है तब माता-

पिताके गुणकर्म पुत्रमें क्यों न आवेंगे ? आम बबूर नहीं हो सकता, बबूर आम नहीं हो सकता इसी प्रकार उच्चवंशका उदारचरित पुरुष कदाचित् निकृष्ट नहीं हो सकता और यदि गुणकर्मपरही यह अधिकार होता तो कदाचित् मूर्ख ब्राह्मणका प्रयोग शास्त्रोंमें न होता । महाभाष्यमें महामान्य पतञ्जलि कहते हैं ।

विद्यातपोभ्यां यो हीनो जातिब्राह्मण एव सः ।

अर्थात् जो विद्या और तपसे हीन हो वह जातिब्राह्मण होता है । भारतके आदिपर्वमें कश्यपजीने गरुडजीसे कहा कि चाण्डालदेशमें ब्राह्मणको मत खाना । गरुडजीने कहा । वहां सब कर्मरहित हैं ब्राह्मणकी पहचान क्या होगी ? कश्यपजी बोले, निगलते समय यदि तुह्मारे कंठमें आग बलने लगे, उसे उगल देना वह ब्राह्मण है । गरुडजीने ऐसाही किया ।

द्रौपदीके स्वयंवरमें जब कर्णने धनुष्य उठा लिया तौ द्रौपदीने कहा मैं सूतपुत्रको नहीं वरूंगी कारण कि यह जातिमें नीच है ।

यदि वेदपाठ, संध्या, पूजाहीसे ब्राह्मण होते तौ क्षत्रियतकभी वेद पढे होते थे । विश्वामित्रपर क्या नहीं आता था; तथापि ब्राह्मणत्वप्राप्तिके निमित्त सहस्रों वर्षतक तप किया और यद्यपि इनका चरु ब्रह्मतेजसे युक्त था, तथापि क्षत्रियाके उदरमें होनेसे ब्रह्मर्षिपदकी प्राप्तिके निमित्त महान् परिश्रम करना पडा, कि तप करते २ शिरमेंसे सधूम तेज निकलने लगा जिससे मानों शरीरका नया संस्कार होनेसे वसिष्ठ और ब्रह्माजीके कथनसे ब्रह्मर्षि पद पाया इससेभी ब्राह्मणजाति पृथक्हही विदित होती है ।

विदुरजी सम्पूर्ण शास्त्रसम्पन्न थे परन्तु जिस समय उनसे महाराजा धृतराष्ट्रने ब्रह्मज्ञानविषयक प्रश्न किया उस समय उन्होंने कहा यद्यपि हम सब जानते हैं, तथापि शूद्रवर्ण होनेके कारण ब्रह्मज्ञान वर्णन नहीं कर सकते और इसी कारण उन्होंने सनत्सुजातमहर्षिको आह्वान करके धृतराष्ट्रको ब्रह्मज्ञान श्रवण

कराया। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि जातिविचार सदासे जन्मसे चला आता है कर्मसे नहीं है।

जातिके अनुसारही अपनी वृत्ति और धर्म करते हुए प्राणी उत्कृष्टता लाभ कर सकता है। अपनी जातिनिर्दिष्ट वृत्ति और धर्मके अनुसार चारों वर्णोंने पूर्ण उन्नति की है, सो इतिहासोंसे भलीभांति प्रगट है। जिस समय विलोमजातिका संयोग हुआ इसी समय संकरजातिकी रचना हुई है। कालक्रमसे कोई कोई नवशिक्षित कहने लगे हैं कि इस जातिभेदनेही देशकी शोचनीय दशा कर दी है। उच्चजाति निकृष्टजनोंको बडी घृणीत दृष्टिसे देखते हैं तथा उनके स.थ आहार विहार न करके उनसे दूर रहते हैं तथा उनके साथ स्पर्शव्यवहारभी नहीं करते इस कारण जातियोंके मध्यमें अनेक वैमनस्य पड गये हैं। इसी कारण सद्भाव और सहानुभूति सर्वथा नहीं रही है, इसमें इस कारण एकता नहीं हो सकती इसी कारण यह देश दावाग्निसे प्रज्वलित रहता है। यह देश अरिदलका इसी कारण आनन्दवर्धक है, इस कारण भारतकी जातिभेद प्रथा सर्वथा दुरवस्थाका मूल कारण है।

इन ऊपर लिखी तर्कनाओंका अनुमोदन हम नहीं करते कारण कि मनुष्यका जन्म पूर्वकर्मानुसार चार वर्णों तथा अन्य जातियोंमें होता है। 'दैवायत्तं कुले जन्म' उच्चजातिके आचारविचारसे निकृष्टजाति कभी क्षुब्ध नहीं होती। जब कि मनुष्यगण अपने शुभाशुभ कर्म द्वारा जन्म ग्रहण करते हैं तब वंशके निमित्त शोक करना वृथा है। क्योंकि,

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।

भला बुरा जो कुछ यह प्राणी कर्म कर आया है वह अवश्य भोगना पडेगा। तथा च,

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परो ददा-

तीति कुबुद्धिरेषा । अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः ॥

सुख दुःखका कोई देनेवाला नहीं है दूसरा देता है यहभी कुबुद्धि है मैं करता हूं यहभी वृथा अभिमान है। प्राणी अपने कर्मसूत्रमें सदा बद्ध रहता है। इस शास्त्रीय वाक्यपर सबका अटल विश्वास है जो कि निकृष्टजाति कर्मानुसार निकृष्टवंशमें जन्मी है वह कर्माधीन होनेसे परिताप नहीं करती। वह चिरकालसे इसी प्रकार उन्नत वंशोंको नत होती चली आई है। उच्चवर्णकी सेवाही उसका परम धर्म है। यथार्थमें वे शास्त्रीय शासनके अनुवर्ती होकर उच्चजातिके प्रति आन्तरिक श्रद्धा और यथोचित सन्मानप्रदर्शन और उनकी प्रसन्नतामें अपनेको चरितार्थ मानते हैं। उच्चजाति न उनका अपमान करती है न वे यह विचार करते हैं कि हमारा अपमान करते हैं किन्तु उनके धर्मकुलानुसार उनसे व्यवहार किया जाता है। जिससे वे प्रसन्न रहते हैं इससे जातिभेदसे उच्चजातिसे निकृष्टजातिका मनवैषम्य नहीं हो सकता।

दूसरे यदि जातिभेदसे अनेक हैं तो यवन कृष्टान आदिमें तो जातिभेद नहीं है तो क्या उनके मध्यमें अन्तर्विवाद नहीं हैं। धर्मसम्बंधी मतभेद किस जातिमें नहीं है सबमें विद्यमान है। यहांतक कि परस्पर घोर विद्वेष रखते हैं। यवनोंमें और भेदको छोडकर कि यह सुन्नी दो दल एक दूसरेके रक्तके प्यासे बने हैं इनमें जैसा प्रबल आत्मविरोध है ऐसा दूसरी जातिमें नहीं है। इनके इतिहास देखनेसे विदित होता है कि पुत्रने पिताको मार दिया अथवा उसको बंदी करके स्वयं राज्यसिंहासनपर बैठा। भाईने भाईको पराजित करके सब वंश संहार किया इस प्रकार जातिजातिके सहित सदा विरोधमें तत्पर रही है। भृत्योंने सुयोग पाकर स्वामीकी विरुद्धता की है। जब आत्मविरोधही अनुक्षण चल रहा है तो और विरोधकी क्या कथा है।

खिष्टोंमें जातिभेद न होकर अनेक सम्प्रदाय हैं उनमें रोमन क्याथिलिक और प्रोटेस्टेण्ट ये दो प्रधान हैं। इनका विरोध देवासुरकी समान बहुकालसे व्याप्त हुआ चलता है। अपना साम्प्रदायिक मत न त्यागनेके कारण राजाके अवलम्बित धर्मको स्वीकार न करनेके कारण सैंकडों प्राणी राजाज्ञासे प्रज्वलित अग्निमें निक्षिप्त फांसी-काष्ठपर आरोपित अथवा असिकी तीक्ष्णधारासे दो खण्डित होकर प्राणत्याग कर गये हैं। ये सब लोग माटाका नाम जानते हैं। यदि एकही सम्प्रदायसे उन्नतिकी इच्छा करते हो तो एकही सम्प्रदायके प्राणियोंने कभी कभी राजद्रोह करके राजाके समूल उन्मूलनकी चेष्टा की है। इस समय इग्लेण्डमें लिबरल और कन्सरवेटिव नाम-की दो सम्प्रदाय हैं इनके मध्यमेंभी कभी २ घोर विवाद चलता है। जब यों है तो खीष्टोंमेंभी एकता खोज करनेसे प्राप्त न होगी। आर्य-समाजी एक सम्प्रदायके होकर तथा जातिभेदको अस्वीकार करके मांसभक्षी और घासभक्षी नामक दो दल होकर परस्पर विवाद कर रहे हैं इससे जातिभेदसे एकताका लोप हो गया है। एवं जातिभेद न होकरही एकताकी प्राप्ति होगी इस प्रकारकी विवेचना करना भ्रम-मात्र है इस कारण जातिभेदकी प्रथासे इस देशमें किसी अनिष्टकी संभावना नहीं है किन्तु अपने निर्दिष्ट धर्म करके कल्याणकी संभा-वना है। खिस्त धर्म करनेसे दूसरे जन्ममें उत्कृष्ट पदकी प्राप्ति होगी।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

भाषाटीकासहितो

जा ति नि र्ण यः ।

दोहा–श्रीगणेश मंगलकरन, हरन सकल जंजाल ।
बुध ज्वालाप्रसादपर, संतत रहो दयाल ॥

ब्राह्मण ।

ब्रह्मणो विप्रस्य प्रजापतेर्वा अपत्यम् । ब्रह्म वेद-स्तदधीते वा सः। ब्रह्मणः षण्प्रत्ययेन पदं सिद्धम् ॥

इति भरतः ।

ब्रह्मा प्रजापतिके अपत्य संतान होनेसे अथवा ब्रह्म (वेद)-के पढनेसे ब्राह्मण पद सिद्ध होता है वा ब्रह्मके आगे षण्प्रत्यय करनेसे सिद्ध होता है ॥

आश्रमोऽस्त्री द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।
विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ षट्कर्म्मा यागादिभिर्युतः ॥

इत्यमरः ।

आश्रमशब्द पुंनपुंसकलिंग है उनमें द्विजाति ब्रह्माके मुखपद्मसे ब्राह्मण उत्पन्न हुए हैं इस कारण यह ब्राह्मण षट्कर्मा यागादि-युक्त श्रेष्ठ गुरु है ॥

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः ।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठा नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः ॥

इति मनुसंहिता ।

भूतोंमें प्राणी श्रेष्ठ हैं, उनमें बुद्धिसे जीनेवाले, बुद्धिमानोंमें मनुष्य और मनुष्योंमें ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं ॥

अपरञ्च–गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः ।
पतिरेव गुरुः स्त्रीणां सर्वत्राभ्यागतो गुरुः ॥

इति चाणक्यः ।

अग्नि द्विजाति तीन्हीं वर्णोंके गुरु है, चारों वर्णोंका ब्राह्मण गुरु है, स्त्रियोंका पतिही गुरु और अतिथि सबका पूजनीय होता है ॥ ब्राह्मणके लक्षण इस प्रकारसे हैं कि,

तिलकं यज्ञसूत्रं च त्रिसन्ध्यं विष्णुपूजनम् ।
गायत्र्यादि जपेन्नित्यमेतद्ब्राह्मणलक्षणम् ॥

तिलक, यज्ञसूत्रधारण, त्रिकाल संध्या और नित्य गायत्रीका जप करना यह ब्राह्मणको सर्वथा उचित है कारण कि यह ब्राह्मणका लक्षण है ॥

अपि च–जात्या कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन च ।
एभिर्युक्तो हि यस्तिष्ठेन्नित्यं स द्विज उच्यते॥

इति वह्निपुराणम् ।

वह्निपुराणमें लिखा है कि जाति, कुल, सदाचार, स्वाध्याय, वेदसे जो नित्यही युक्त है वह नित्य ब्राह्मण कहा जाता है ॥

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा ।
दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥

इति मनुसंहिता ।

वेद पढना पढाना, यज्ञ करना कराना, दान लेना और देना ये छः कर्म मनुजीने ब्राह्मणोंके निमित्त वर्णन किये हैं अर्थात् ब्राह्मणोंको इन छः कर्मोंका अवश्य प्रतिपादन करना चाहिये परन्तु जो पूर्व जातिसिद्ध ब्राह्मण हैं उनके निमित्त छः कर्मोंके करनेका अधिकार है ॥

चतुर्णामपि वर्णानामाचारो धर्मपालकः ।
आचारभ्रष्टदेहानां भवेद्धर्मः पराङ्मुखः ॥
षट्कर्माभिरतो नित्यं देवतातिथिपूजकः ।
हुतशेषं तु भुञ्जानो ब्राह्मणो नावसीदति ॥
सन्ध्या स्नानं जपो होमः स्वाध्यायो देवतार्चनम् ।
वैश्वदेवातिथेयं च षट् कर्माणि दिने दिने ॥

इति पराशरसंहिता ।

चारों वर्णोंका आचारही धर्मका पालन करनेवाला है । जो आचारसे भ्रष्ट रहनेवाले हैं वे धर्मपराङ्मुख जानने । नित्य छः कर्मोंसे रत, देवता अतिथिका पूजक, हवनसे बचे अन्नका भोजन करनेवाला ब्राह्मण कभी दुःखी नहीं होता । संध्या, स्नान, जप, होम, वेदपाठ, देवताकी पूजा, वैश्वदेव, अतिथिसत्कार ब्राह्मणको ये छः कर्म नित्य करने चाहिये ॥

षट्कर्मनिरतो विप्रः कृषिकर्माणि कारयेत् ।
हलमष्टगवं धर्म्यं षड्गवं मध्यमं स्मृतम् ।
चतुर्गवं नृशंसानां द्विगवं वृषघातिनाम् ॥

इति पराशरसंहिता ।

पराशरसंहितामें लिखा है कि षट्कर्मसे युक्त ब्राह्मण कृषिकर्म करा सकता है । आठ बैलोंका हल धर्मरूप, छः बैलोंका मध्यम, चार बैलोंका नृशंसोंका और जिनके पास हलमें जोतनेको दोही बैल हैं वे वृषोंको अधिक कष्ट देते हैं इस कारण वह हल गोघातिका कहा है ॥

पाशको मत्स्यघाती च व्याधः शाकुनिकस्तथा ।
अदाता कर्षकश्चैव पञ्चैते समभागिनः ॥

वृक्षान् छित्त्वा महीं भित्त्वा हत्वा च मृगकीटकान् ।
कर्षकः खलु यज्ञेन सर्वपापात् प्रमुच्यते ॥
राज्ञे दत्त्वा तु षड्भागं देवानां चैकविंशकम् ।
विप्राणां त्रिंशकं भागं कृषिकर्त्ता न लिप्यते ॥

इति पराशरसंहिता ।

वहीं लिखा है पाशधारी, मच्छीमार, व्याध, शाकुनिक पक्षी पकडनेवाले, दान न देनेवाले और किसान ये छः बराबर दोषके भागी हैं । वृक्षोंके छेदन करने, पृथ्वीके विदारने, मृगकीटोंके मारनेसे, खेतीकर्त्ता यज्ञकरके पापसे छूट सकता है । राजाको छठा, देवताओंको २१ वां और ब्राह्मणोंको तीसवां भाग देकर खेती करनेवाला दोषको प्राप्त नहीं होता है ॥

जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते ।
विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रियलक्षणम् ॥

इति प्रायश्चित्तविवेकः ।

प्रायश्चित्तविवेकमें लिखा है । जन्मसे ब्राह्मण, संस्कारसे द्विज और विद्यासे विप्र होता है । ये तीन श्रोत्रियके लक्षण कथन किये हैं इस प्रकार ब्राह्मणादिशब्द विशेष २ अर्थमें प्रयुक्त हुआ है॥

नोपतिष्ठति यः पूर्वां नोपास्ते यस्तु पश्चिमाम् ।
स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् तथा मनुः ।

जो प्रातःकालकी संध्या नहीं करता और संध्यासमयकी उपासना नहीं करता उसको सम्पूर्ण द्विजकर्मोंसे शूद्रकी तुल्य बाहर कर देना ॥

लाक्षालवणसंमिश्रकुसुम्भक्षीरसर्पिषाम् ।

विक्रेता मधुमांसानां स विप्रः शूद्र उच्यते ॥

इति अत्रिसंहिता।

जो ब्राह्मण लाख, लवणसंयुक्त द्रव्य, कुसुंभ, दूध, घृत, मधु और मांस बेचता है वह शूद्रवत् कहा जाता है। यह अत्रिसंहितामें लिखा है ॥

भारतवर्षके उत्तर पश्चिम प्रदेश अतिशय रमणीय और बहुतर पुण्यतीर्थनिषेवित पवित्रस्थान है। पूर्वकालमें भारतवर्षके सम्पूर्ण ऋषि, मुनि, शास्त्रकर्त्ता, महामहापण्डित और दूसरेभी महापुरुष प्रगट हुए थे। उनमें अधिक इन्हीं देशोंके रहनेवाले थे। विदित होता है कि यह सब देश ब्राह्मणोंका आदिनिवासस्थान था। शास्त्रकारोंने इन देशोंके ब्राह्मणोंको सदाचारसम्पन्न कहकर बडी प्रशंसा की है ॥

सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते ॥
अस्मिन् देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः।
वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते ॥
कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पाञ्चालाः शूरसेनकाः।
एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्त्तादनन्तरम् ॥
एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

इति मनुसंहिता।

सरस्वती और दृषद्वती इन देवनदियोंके बीचका जो देश है वह देवनिर्मित देश ब्रह्मावर्त कहलाता है। इस देशमें जो आचार परम्पराके क्रमसे प्राप्त है वह ब्राह्मणादि वर्ण तथा इनके अन्तर्वती संकरजातिका सदाचार कहाता है। कुरुक्षेत्र, मत्स्यदेश,

पाञ्चाल, शूरसेन ये ब्रह्मर्षिदेश कहलाते हैं। इसके उपरान्त ब्रह्मावर्त देश है। इस देशमें उत्पन्न हुए ब्राह्मणोंसे सम्पूर्ण पृथ्वीभरके मनुष्य अपने २ चरित्रोंको सीखें अर्थात् आचारविचारशिक्षाको प्राप्त हों ॥

ब्राह्मण ।

वंगदेशमें राढी और वारेन्द्र वैदिक प्रभृति कई एक श्रेणीके ब्राह्मण निवास करते हैं। उनमें राढीय ब्राह्मण विशेष सम्मानित और संख्यामें अधिक हैं। इन्होंने कान्यकुब्जदेशसे वहां गमन किया है। यह किस समय और क्यों वहां गये सो विस्तारसे कहते हैं ॥

बौद्धधर्मके प्रादुर्भावकालमें इसके अप्रतिम तेजके प्रभावसे वंग विहारादि देशोंमें सनातन आर्य्यधर्मकी प्रभा प्रायः अस्तमित हो गई थी। नये धर्मके प्रतिघातसे प्राचीन आर्य्यधर्म थरथर कम्पित होता था। लोकमें उस समय नये धर्ममें अनुराग होने लगा था। वैदिक क्रियाकाण्ड भयके कारण लोप होने लगा जब कालक्रमसे भगवान् शंकराचार्यने जन्म ग्रहण कर १०३२ मतोंका निराकरण कर बौद्धोंको सर्वथा परास्त किया और आर्य्यधर्मकी उन्नति होने लगी। जिस समय महाबलपराक्रान्त राजा आदिशूर वंगसिंहासनपर विराजमान थे उस समय ब्राह्मणोंके धर्मकी अवस्था शोचनीय थी। एक समय राजा आदिशूरने पुत्रेष्टि यज्ञ करनेकी इच्छा की, परन्तु देखा कि बंगालमें उस समय ब्राह्मणगण वेदादिशास्त्रोंसे अनभिज्ञ, आचारभ्रष्ट और ब्रह्मण्य शक्तिविहीन थे। उनके द्वारा यज्ञ सम्पादन वा कार्यसिद्धिकी संभावना न जानकर वेदपारगामी, यज्ञकार्यविशारद, सद्वंशभूत पांच ब्राह्मणोंके भेजनेको कान्यकुब्जाधिपति महाराज वीरसिंहके निकट दूत भेजा। कान्यकुब्जराजाने उनकी प्रार्थनाके अनुसार वेदविशारद, क्रियादक्ष, महाप्रभावशाली पांच गोत्रके पांच ब्राह्मण भेज दिये। इन ब्राह्मणोंने शके ९९९में उस

देशमें गमन किया था।" आदिशूरो नवनवत्याधिकनवशतीशताब्दे पञ्च ब्राह्मणानानयामास " विद्यासागरकृत कृष्णचरित्र॥

कान्यकुब्जात् समानीतान् दूतेन द्विजपंचकान्।
वेदशास्त्रेष्ववगतान् सर्वास्त्रे च विशारदान्॥
गोयानारोहितान् विप्रान् खङ्गचर्मादिभिर्युतान्।
पत्तिवेशान् समालोच्य विषादो जायते हृदि॥
अश्रद्धा जायते राज्ञ इति ज्ञात्वा द्विजोत्तमाः।
आशीर्वादार्थनिर्म्माल्यं मल्लकाष्ठोपरि स्थितम्॥
तदा काष्ठं सजीवं स्यात् फलपल्लवसंयुतम्।
इति दृष्ट्वा नृपस्तस्मिन् कम्पान्वितकलेवरः।
स्तोत्रं च बहुधा तेषामकरोत् स नृपोत्तमः॥

इति देवीवरघटककृतकारिका।

देवीवरघटककृतकारिकामें लिखा है। कान्यकुब्ज देशसे दूतोंके द्वारा बुलाये हुए, वेदशास्त्रमें निपुण, सम्पूर्ण अस्त्रोंमें पण्डित, ढाल तल्वार लिये, बैलोंकी गाडीमें बैठे, पांच ब्राह्मणोंको राजद्वारमें उपस्थित हुआ देखकर दूतोंने राजासे कहा। राजा उनके वीरवेश-की कथा सुनकर दुःखी हुआ। वे ब्राह्मण श्रेष्ठ राजाकी अश्रद्धा-भावको जान गये। उसको आशीर्वाद देनेको जो निर्माल्य लाये थे वह निकटवर्ती एक मल्लकाष्ठके ऊपर स्थापन कर दिया। उन-का ऐसा अद्भुत प्रभाव था कि, अर्घस्थापनमात्रसेही वह शुष्क मल्लकाष्ठ उसी क्षणमें फलपत्तोंसे शोभित होकर सजीव हो उठा। यह देखतेही वह नृपश्रेष्ठ भयसे कम्पित शरीर होकर उन ब्राह्म-णोंकी अनेक प्रकारसे स्तुति करने लगा॥

तब ब्राह्मणोंने प्रसन्न होकर राजाको आशीर्वाद दिया फिर राजाने उन पांच महापुरुषोंके द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ कराया इस यज्ञके

अमोघ प्रभावसे संवत्सरमें राजाके पुत्र हुआ। उस समय राजाने विविध प्रकारकी सामग्रीसे उन ब्राह्मणोंको तृप्त कर अपने देशमें रहनेका बडा अनुरोध किया। वह राजाकी भक्ति और विनयसे संतुष्ट होकर वहां रहनेकी इच्छा करते हुए राजाने पञ्चकोटि, कामकोटि, हरिकोटि, कंकग्राम और वटग्राम ये पांच ग्राम उनके निवास करनेको दे दिये। जिनमें वे निवास करने लगे, इन पांच महापुरुषोंसे वंगदेशमें राढी वीरेन्द्रश्रेणीके ब्राह्मणसमूह उत्पन्न हुए और उनके सहित जो पांच जन अनुचर थे उनके सकाशसे उस देशमें कायस्थ जन उत्पन्न हुए ॥

भट्टनारायणो दक्षो वेदगर्भोऽथ छान्दडः ।
अथ श्रीहर्षनामा च कान्यकुब्जात् समागताः ॥
शाण्डिल्यगोत्रजश्रेष्ठो भट्टनारायणः कविः ।
दक्षोऽथ काश्यपश्रेष्ठो वात्स्यश्रेष्ठोऽथ छान्दडः ॥
भरद्वाजकुलश्रेष्ठः श्रीहर्षो हर्षवर्द्धनः ।
वेदगर्भोऽथ सावर्णो यथा वेद इति स्मृतः ॥
पञ्चकोटिः कामकोटिर्हरिकोटिस्तथैव च ।
कङ्कग्रामो वटग्रामस्तेषां स्थानानि पंच च ॥

इति कुलदीपिका ।

कुलदीपिकामें लिखा है। भट्टनारायण, दक्ष, वेदगर्भ, छान्दड और श्रीहर्ष ये कान्यकुब्जदेशसे आये थे। कवि भट्टनारायण शाण्डिल्यगोत्री, दक्ष कश्यपगोत्री, छान्दड वात्स्यगोत्री, हर्षवर्द्धन हर्ष भरद्वाजगोत्री, वेदगर्भ सावर्णगोत्रमें उत्पन्न वेदकी तुल्य हुए। पञ्चकोटि, कामकोटि, हरिकोटि, कङ्कग्राम, वटग्राम ये पांच इनके स्थान थे ॥

भट्टतः षोडशोद्भूता दक्षतश्चापि षोडश ।

चत्वारः श्रीहर्षजाता द्वादश वेदगर्भतः।
अष्टावथ परिज्ञेया उद्भूताश्छान्दडान्मुनेः॥

इति कुलरामः।

भट्टसे सोलह पुत्र, दक्षसे सोलह, श्रीहर्षके चार, वेदगर्भके बारह और छान्दडके आठ सुयोग्य पुत्र उत्पन्न हुए। इस प्रकार इन पांच महात्माओंके ५६ पुत्र हुए हैं॥

इन ५६ को रहनेके निमित्त राजाकी आज्ञासे एक २ ग्राम मिला था। ये जिस २ गांवमें रहे उनकी सन्तान उसी २ गांवके नामानुसार बोली जाती थी। उनको गांई अर्थात् ग्रामवासी कहने लगे॥

भट्टनारायणके १६ पुत्र थे। इन्होंने राजासे १६ ग्राम भेटमें पाये थे इस कारण षोडशागांईकी उपाधि प्राप्त थी।

वन्द्यः कुसुमो दीर्घाङ्गी घोषली वटव्यालकः।
पारी कुली कुशारिश्च कुलभिः सेयको गडः॥
आकाशः केशरी माषो वसुयारिः करालकः।
भट्टवंशोद्भवा एते शाण्डिल्ये षोडश स्मृताः॥

इति कुलदीपिका।

कुलदीपिकामें लिखा है। वन्द्य, कुसुम, दीर्घाङ्गी, घोषली, वटव्यालक, पारी, कुली, कुशारि, कुलभी, सेयक, गड, आकाश, केशरी, माष, वसुयारी, करालक ये शाण्डिल्यगोत्री भट्टके यहां सोलह कुमार जन्मे थे॥

दक्षके सोलह पुत्र हुए उन्होंने सोलह ग्राम पाये। उनकोभी सोलह गांवकी उपाधि प्राप्त हुई।

चट्टोऽम्बुली तैलवाटी पोडारिर्हडगूढकौ।
भूरिश्च पालधिश्चैव पर्कटिः पुषली तथा॥

मूलग्रामी कोयारी च पलसायी च पीतकः ।
सिमलायी तथा भट्ट इमे काश्यपसंज्ञकाः ॥

इति कुलदीपिका ।

चट्ट, अम्बुली, तेलवाटी, पोडारि, हड, गूढक, भूरि, पालधि, पर्कटि, पुषली, मूलग्रामी, कोयारी, पलसायी, पीतक, सिमलायी, भट्ट ये कश्यपगोत्री दक्षके कुमार हुए ॥

श्रीहर्षके चार पुत्र हुए उसके अनुसार यह वंश चारगांई कहाया।

आदौ मुखटी डिण्डी च साहरी राइकस्तथा ।
भारद्वाजा इमे जाताः श्रीहर्षस्य तनूद्भवाः ॥

इति कुलदीपिका ।

मुखटी, डिण्डी, साहरी, राइक ये चार पुत्र भारद्वाज गोत्र श्रीहर्षके उत्पन्न हुए ॥

वेदगर्भके बारह पुत्र हुए उनके अनुसार इनको बारह गांईकी उपाधि मिली ।

गाङ्गलिः पुंसिको नन्दी घण्टाकुन्दसियारिकाः ।
साटो दायी तथा नायी पारी वाली च सिद्धलः ।
वेदगर्भोद्भवा एते सावर्णे द्वादश स्मृताः ॥

इति कुलदीपिका ।

गाङ्गलि, पुंसिक, नन्दीग्रामी, घण्टेश्वरी, कुन्दग्रामी, सियारिक, साटो, दायी, नायी, पारीहाल, वाली, सिद्धल ये विख्यात बारह पुत्र सावर्णगोत्र वेदगर्भके हुए ॥

छान्दडके आठ पुत्र हुए उनके अनुसार वे आठग्रामी कहाये ।

काञ्चिविल्ली महिन्ता च पूतितुण्डश्च पिप्पली ।
घोषालो वापुलिश्चैव काञ्जरी च तथैव च ।

सिमलालश्च विज्ञेया इमे वात्स्यकसंज्ञकाः ॥

इति कुलदीपिका।

कांचिविल्ली, महिन्ता, पूतितुण्ड, पिप्पली, घोषाल, वापुलि, कांजरी, सिमलाल ये वात्स्यगोत्री छान्दडके पुत्र हुए ॥

आदिशूरके बुलाये ब्राह्मणादिके वंशोंके कई एक पुरुष गत हो गये इन वंशोंको विद्याचर्चा और सदाचारका लोप होने लगा। इनके दोषोंके निवारणकी इच्छासे आदिशूरके दौहित्रवंशके अधस्तन सप्त पुरुष वंगाधिपति महाराज बल्लालसेनने कुलकी प्रथा संस्थापित की। उन्होंने नौ लक्षणोंको कुलीनताका गुण निर्धारित किया वे ये हैं ॥

आचारो विनयो विद्या प्रतिष्ठा तीर्थदर्शनम्।
निष्ठा वृत्तिस्तपो दानं नवधा कुललक्षणम् ॥

इति कुलदीपिका।

कुलदीपिकामें लिखा है। आचार, विनय, विद्या, प्रतिष्ठा, तीर्थदर्शन, कर्मनिष्ठा, श्रेष्ठवृत्ति, तप, दान यह नौ कुलके लक्षण हैं ॥

ब्राह्मणादि वंशोंमें जिनमें नौ गुण पाये गये उनको उस राजाने सौलीन्य पदवी प्रदान की। राठीय ब्राह्मणोंके ५६ ग्राम थे। उनमें वन्द्य, चट्ट, मुखटी, घोषाल, पूतितुण्ड, गाङ्गोली, कांजीलाल और कुन्दग्रामी ये आठ गांई सम्पूर्ण रूपसे नवगुणविशिष्ट थे इस कारण इनको कौलीन मर्यादा प्राप्त हुई। पालधी, पर्कटी, सिमलायी, वापुली आदि चौंतीस गांई आठ गुणविशिष्ट थे इस कारण इनको श्रोत्रिय संज्ञा प्राप्त हुई और दीर्घाङ्गी, पारिहा, कुलभी, पोडारी प्रभृति चौदह गांई न्यून गुणोंसे संयुक्त थे इस कारण इनकी गौणकुलीन संज्ञा हुई। इनके शिवाय वंशज नाम और एक प्रकारके ब्राह्मण हैं ये सब कुलीन निकृष्ट वंशमें कन्या लेने देनेसे अपने माहात्म्यसे रहित हो गये। उन्हीकी वंशज संज्ञा हुई है। वंशजोंकी मर्यादा गौण कुलीनोंकी बराबर है ॥

वारेन्द्रश्रेणीके ब्राह्मण।

कान्यकुब्जदेशसे आया हुआ पंच ब्राह्मणरूप यह महावृक्ष बंगालदेशमें रोपित हुआ। राढी और वारेन्द्रश्रेणी उनकी दो शाखा मात्र हैं। दोनों श्रेणीही आदिशूरके बुलाये पंचयाज्ञिक ब्राह्मणोंसे अपनी उत्पत्ति वर्णन करते हैं। राढीय कुल शास्त्रके मतसे पांच ब्राह्मणोंके नाम भट्टनारायण, दक्ष, वेदगर्भ, छान्दड और श्रीहर्ष हैं और वारेन्द्रोंके मतसे उनके नाम नारायणभट्ट, सुसेन, पराशर, धराधर और गौतम है। परन्तु गोत्र दोनों पक्षोंमें एकही प्रकार है। किस समय और किस प्रकार कान्यकुब्ज सन्तान दो श्रेणीमें विभक्त हुए इसका यथार्थ निर्णय करना कठिन है। कोई कोई अनुमान करते हैं कि सात आठ पुरुषोंके उपरान्त कान्यकुब्जगणकी विलक्षण वृद्धि हुई, तब उनके मध्यमें गृहविच्छेद प्रारंभ हुआ, तब वे दो भागोंमें विभक्त होकर पृथक् २ दो स्थानोंमें निवास करने लगे। जो राढदेश अर्थात् भागीरथीके पश्चिम और गंगाके दक्षिण तीरके मध्यवर्ती स्थानोंमें निवास करने लगे उनकी राढीय संज्ञा हुई और जो वारेन्द्रदेश अर्थात् पद्मानदीके उत्तर एवं करतोया और महानदीके मध्यवर्ती प्रदेशमें वास करने लगे। वे वारेन्द्रनामसे अभिहित हुए। कोई कोई कहते हैं इन महाराजा बलसेनने कौलिन्य मर्यादा व्यवस्थानके पहले ब्राह्मणोंको दो श्रेणीमें विभक्त किया था। जो हो श्रेणीबन्धनसे प्रथम दोनों श्रेणीका ज्ञातित्वसम्बन्ध एकवार लोपसा होकर परस्पर आहार व्यवहार आदान प्रदानादि रहित हो गया था। दोनों श्रेणीकी वर्तमान अवस्था देखनेसे यह एकही आदिपुरुषसे सम्भूत है यह बात सहसा प्रतीत नहीं होती है॥

वारेन्द्रोंनेभी राजाके समीपसे निवासके निमित्त एक एक ग्राम पाया था। उनमें एक शत गांई हैं। उनमें पन्द्रह गांई प्रधान हैं। महाराज बल्लालसेनने इनके मध्यमेंभी कौलीन प्रथा स्थापित की

थी । सुतराम् इनके मध्यमेंभी कुलीन, श्रोत्रिय और कष्टश्रोत्रिय यह तीन श्रेणी हैं । मैत्र, भीम, रुद्र, वागत्री, संयामिनि, लाहिडी और भादुडी ये ९ गांई कुलीन हैं । करंज, नन्दनावासी, भट्टोशाली, चम्पटी, म्पटी, लाडुली, कामदेवक और आदित्य यह गाईं सिद्ध श्रोत्रिय कहाये । अवशिष्ट ८९ गांई गौड और कष्टश्रोत्रिय कहकर विख्यात हुए हैं । वारेन्द्रके वंशजोंको काप कहते हैं ॥

सप्तशतीसम्प्रदाय ।

पञ्चब्राह्मणके आगमनसे पहले वंगदेशमें ब्राह्मणोंके सात सौ घर थे । यह विद्या ब्राह्मण्य और आचारादि विषयमें कान्यकुब्जोंसे न्यून थे इनके गोत्रभी पंचगोत्रके बाहिर थे इस कारण कान्यकुब्जोंके साथ जातिभ्रंशसे इनका मिलन न हुआ । इनकी सप्तशतीनामसे विख्यात एक पृथक् सम्प्रदाय अश्रद्धेय होकर निवास करती थी इनके मध्यमें आरथ, वालखवि, जगाये, भगाये, पिखूरी, मुलकजूरी, गांई आदि इनकी उपाधि थी ॥

इस समय सप्तशतीब्राह्मण बहुत थोडे हैं इससे बोध होता है कि कितने एक इनमेंसे कालक्रमसे राठी, वारेन्द्र और वैदिकश्रेणीमें मिल गये । कोई २ नीच जातियोंका पौरोहित्य स्वीकार करके तथा कोई निकृष्ट दान ग्रहण करनेसे वर्णब्राह्मण कोई २ अग्रदानी कोई २ ग्रहविप्र नामसे विख्यात हुए और जो उनमें विशेष तेजस्वी और समृदुशाली थे उनके बीचमें दो चार घर अबभी स्वभावमें स्थिति करते हैं ॥

वैदिकश्रेणी ।

वैदिकनामसे प्रसिद्ध इस देशमें ब्राह्मणोंकी और एक सम्प्रदाय है । यहभी दो श्रेणीमें विभक्त है । दाक्षिणात्य वैदिक पाश्चात्य वैदिक यह द्राविडादि दक्षिणदेश निवासी हैं और वहींसे आये हैं । वे दाक्षिणात्य वैदिक हैं और जो वाराणसी आदि पश्चिम

देशके निवासी अथवा दाक्षिणात्योंसे पीछे आये हैं वे पाश्चात्य वैदिक कहे जाते हैं ॥

कान्यकुब्ज देशसे आये ब्राह्मणोंकी कई पीढी बीचनेपर कालक्रमसे यह वंश वेदादि चर्चासे ह्रास होनेपर अविद्याकी तमोमयी छायासे संयुक्त हुआ । उस समय कान्यकुब्जोंकी सन्तान द्राविडादिदेशसे आये हुए वेदपारगामी ब्राह्मणोंके निकट शिक्षा पाने लगी । दोनों सम्प्रदायोंके मध्यमें गुरुशिष्यसम्बन्ध हुआ । नये आये हुए ब्राह्मण बंगालमें गंगाधिष्ठानके पवित्र स्थानोंमें परम पवित्रताके कारण स्थायीरूपसे निवास करने लगे ॥

कालक्रमसे राठी, वरेन्द्र और दाक्षिणात्य वैदिकोंमें जब विद्याकी न्यूनता हुई इस समय पश्चिमदेशीय विद्वान् आकर उनको वेदादि शास्त्रका उपदेश करने लगे । यहभी फिर स्वदेशमें न जाकर बंगनिवासी हो गये यही सम्प्रदाय पाश्चात्य वैदिक कहाती है ॥

कोई २ कहते हैं बुद्धके प्रादुर्भावसे जब उत्कलदेशका वैदिकक्रियाकलाप लुप्त हुआ तब महाराष्ट्रीय गणोंने वैदिक काण्डके फिर प्रचार करनेके निमित्त इन सब ब्राह्मणोंको उस वैदिककार्यमें नियुक्त किया । इन्होंने उत्कलदेशसे क्रमसे बंगदेशमें आगमन किया ॥

वैदिकोंकी दाक्षिणात्य सम्प्रदाय पञ्चद्रविण ब्राह्मणोंके मध्यमें और पाश्चात्य सम्प्रदाय पञ्च गौड ब्राह्मणोंके मध्यमें गिनी जाती है । पंच गौड और पंच द्रविड इन दोनों ब्राह्मणोंकोही कान्यकुब्ज ब्राह्मण आप्तग्रंथोंमें कथन किया है इससे वैदिकभी कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं ॥ यथा,

सर्वे द्विजाः कान्यकुब्जा माथुरं मागधं विना ।
मागधो ब्रह्मणा पूर्वं कल्पितो द्विज एव च ।

वाराहस्य तु वर्मेण माथुरो जायते तथा ॥

इति भृगुरामसंहिता।

माथुर अर्थात् मथुरावासी ब्राह्मण और मागध अर्थात् मगध-देशवासी ब्राह्मणोंको छोडकर सब ब्राह्मणही कान्यकुब्ज शब्द-वाच्य हैं। मागधगण पूर्वकालमें ब्रह्माद्वारा कल्पित हुए हैं और भगवान् वाराहजीके प्रस्वेदसे माथुर ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति हुई है। तीर्थस्थाननिवासी होनेसे ये सबकेही पूजनीय हैं॥

वैदिकोंकी गांई उपाधि नहीं है इनके मध्यमें अनेक गोत्र हैं उनमें भारद्वाज, कश्यप, शाण्डिल्य, मौद्गल्य, वात्स्य, सावर्ण, गौतम, सौकालिन्, अग्निवेश, कौशिक, धृतकौशिक, विश्वामित्र, कात्यायन प्रभृति प्रधान गोत्र हैं। वैदिकोंमेंभी कुलीन हैं यह दाक्षिणात्योंमें वंशाश्रित और पाश्चात्योंमें पुरुषाश्रित हैं॥

मध्यश्रेणीके ब्राह्मण।

ब्राह्मणोंकी और एक सम्प्रदाय है वे मध्यश्रेणीके ब्राह्मण कहाते हैं। राढी, वारेन्द्र और वैदिक ब्राह्मणोंने निजश्रेणी बन्धन अतिक्रम करके अपनेसे कुछ निकृष्ट कुलमें विवाहादि करने करानेद्वारा मध्यश्रेणी निर्माण की है॥

मेदिनीपुर जिलेके अन्तर्गत तेमोलुक महिषादल कान्दि आदि स्थानमें और बाकुडा आदि स्थान स्थानमें इस प्रकारके ब्राह्मण देखे जाते हैं॥

इनके गोत्र हैं परन्तु गांव नहीं है तथा इनके मध्यमें कौलीनता नहीं इनमें सदाचारसम्पन्न व्यक्तिही सन्मानित और गौरवान्वित होते हैं॥

उपनिवेशिक।

जो ब्राह्मण थोडे दिनोंसे पश्चिमसे जाकर वंगमें बसे हैं वे उप-

निवेशिक ब्राह्मण कहे जाते हैं इनका इन देशोंके ब्राह्मणोंसे चलन बहुत न्यून है यह अपनी समान घरोंमेंही आदान प्रदान करते हैं॥

यह ब्राह्मण अपने दो भागमें विभक्त हैं उत्कल और कान्यकुब्ज तथा पश्चिमी उत्कल श्रेणीके ब्राह्मण मिश्र पण्डाप्रभृति उपाधिवाले हैं ॥

कान्यकुब्जोंमेंभी छः घर मुख्य हैं और कुलकी अहंता अबभी अधिक है परन्तु विवाहमें जो निठुराई धनके निमित्त की जाती है तथा कन्याओंके जैसे कष्ट सहन करने पडते हैं उससे यह कुल कभी २ सभ्यपुरुषोंमें आक्षेपके योग्य होते हैं। इनके सोलह गोत्रोंका संक्षेपसे कथन करते हैं ॥

कश्यपगोत्र ।

ब्रह्माजीके पुत्र मरीचि उनके कश्यप हुए । जिनसे यह कुल विख्यात हुआ उनके गोत्रमें देवल ब्राह्मण बडे प्रसिद्ध हुए यह कस्मीरसे भदावरमें आये । वहांके राजाने बडा सत्कार किया इनके पुत्र आसादत्तने शिवराजपुरमें आप राजाको यज्ञ कराया राजाने इनको साढे दश ग्राम दिये इनके ग्यारह पुत्र हुए। धनीराम मनोहमें, काशीराम बरुआमें, राजाराम सखरेजमें, वंशगोपाल गौरीमें, लोकनाश शिवराजपुरमें, बंदीराम शिवलीमें, परमानंद उमरीमें, सुखानंद पचोरमें, हरिराम हरिवंशपुरमें, चन्दन गूदरपुरमें, नंदराम चिंगरपुरमें बसे यह आधा स्थान है । मनोहमें धनीराम त्रिपाठीके पुत्र हरीधन्नी लक्ष्मण खेचर, हरीके आसादक्षी तिवारी ख्युराके कहाये। प्रत्येक गोत्रमें पुरुषाके नामसे अथवा पुरुषाने जिस ग्राममें निवास किया है उसके नामसे आस्पद विख्यात है तथा आस्पद एक पदवीभी है जो गण और कर्मसे प्राप्त हुई थी जैसे तिवारी, त्रिवेदी, दीक्षित, शुक्ल, मिश्र, आवस्थी, पांडे, पाठक, दुबे (द्विवेदी), त्रिवेदी, (चौबे) चतुर्वेदी, उपाध्याय, अग्निहोत्री, वाजपेयी आदि जैसे वेदअध्ययन करनेसे त्रिपाठी द्विवेदी त्रिवेदी चतुर्वेदी कहाये। अध्यापक

होनेसे पाठक, पांडे, भट्टाचार्य, उपाध्याय, पाठक कहाये । यज्ञ करने करानेसे अग्निहोत्री, वाजपेयी, दीक्षित, अवस्थी कहाये । गुणकर्मोंमें निर्मलताके कारण शुक्ल और सब गुण और कर्मोंमें निपुण सभ्यतायुक्त और सबसे मिलनसारी करनेसे मिश्र कहाये इस प्रकार सब कुलोंमें जानना । जो जो जहांके तिवारी मिश्र आदि हैं वे उसी ग्रामके नामसे प्रसिद्ध हैं ॥ १ ॥

शाण्डिल्यगोत्र ।

जब कश्यपजीने यज्ञ किया तब उस समय अग्निकुंडसे एक पुरुष उत्पन्न हुआ उसका नाम कश्यपजीने हुताशन रक्खा । शाण्डिल्य गोत्र किया कारण कि अग्निका गोत्रभी शाण्डिल्यही है। हुताशनके गोत्रमें मनोरथ पुत्र हुआ इसने बुंदेलखण्डके राजा अमरसिंहको यज्ञ कराया यह महाप्रतापी हुए इनका वंश बहुत चला है ॥ २ ॥

महर्षिकात्यायनके वंशमें चतुर्भुज द्विवेदी बड़े विख्यात हुए और बडा वंश चला कात्यायन महर्षि विख्यात हैं ॥ ३ ॥

भरद्वाजगोत्र ।

ब्रह्माके पुत्र अंगिरा, अंगिराके बृहस्पति इनके भरद्वाज हुए इनका वंश बहुत चला। इसमें द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा बडे विख्यात हैं । ये पांडे कहाये ॥ ४ ॥

उपमन्युगोत्र ।

ब्रह्माके पुत्र वसिष्ठ, वसिष्ठके शिष्य व्याघ्रपाद, उनके पुत्र उपमन्यु हुए उनसे यह गोत्र चला । इसमें भूपानाम बडे पंडित हुए । धर्मपाल राजा इनका शिष्य हुआ ॥ ५ ॥

सांकृतगोत्र ।

ब्रह्माजीके वंशमें सांख्यायन मुनि हुए । इनके पुत्र गगन हुए गगनके पुत्र सांकृत हुए जिससे यह गोत्र चला है । इनके पुत्र

जीवाश्व, जीवाश्वके वंशमें पृथ्वीधर बड़े विख्यात हुए । कौशिकपुरके राजाने इनको अवस्थीकी उपाधि दी । अपने यहां यज्ञ कराया इनका वंश सर्वत्र फैला । छः गोत्र पुरे हुए ॥ ६ ॥

गर्गगोत्र ।

यदुवंशियोंके पुरोहित गर्गजीसे चला है इनके वंशमें महानंद चौबे प्रतापी हुए ॥ ७ ॥

गौतमगोत्र ।

यह ब्रह्माके पुत्रोंमें है इनके गोत्रमें गौतमी गंगाके निकट माधवानन्द शुक्ल बड़े विख्यात हुए ॥ ८ ॥

भारद्वाजगोत्र ।

इन ऋषिके गोत्रमें तपोधन प्रतापी हुए जिनसे विख्याती हुई ॥ ९ ॥

धनंजयगोत्र ।

इसका व्योरा यह कहते हैं कि जिस ब्राह्मणके बालक मर जाते थे अर्जुन और श्रीकृष्णने ला दिये उसमें एक बालक बडा विद्वान् हुआ और धनंजयने बचाया इस कारण धनंजय गोत्र स्वीकार किया । इसका नाम कृष्णानन्द था ॥ १० ॥

कश्यपगोत्र ।

मुइहार ब्राह्मणोंके वंशमें यवनोंके युद्ध होनेसे और ब्राह्मणोंके मरनेसे गर्भिणी ब्राह्मणीने ससुरारमें जाय रक्षा की उसका बालक उत्पन्न होकर कश्यप गोत्री तिवारीके पास पहुँचाया गया । उसकी माता तुरंत मर गई थी सुखमणि तिवारीने उसको काश्यप गोत्र कहा ११॥

वत्सगोत्र ।

ब्रह्माके वंशमें वत्सऋषि बड़े तेजस्वी हुए । इनके वंशमें माधवानन्दन बडे प्रतापी हुए ॥ १२ ॥

वसिष्ठगोत्र ।

वसिष्ठऋषि ब्रह्माजीके पुत्र हैं । इनका गोत्र विख्यात है । इस वंशमें महानंद विख्यात हुए हैं ॥ १३ ॥

कौशिकगोत्र ।

गाधिके पुत्र विश्वामित्र जाको कौशिक कहते हैं इनके गोत्रमें देवकीनंदन विख्यात हुए ॥ १४ ॥

कवस्तिगोत्र ।

कवस्तिऋषि बड़े तेजस्वी हुए इनके वंशमें योगराज बड़े विख्यात हुए ॥ १५ ॥

पाराशरगोत्र ।

पराशरके पुत्र पाराशर हुए ये व्यासजीके पिता हैं इन्हीसे यह गोत्र चला है । इसमें शक्तिधर बडे प्रतापी हुए इनका विशेष विवरण कान्यकुब्जवंशावलीमें लिखा है ॥

इस देशमें गोडे ब्राह्मणभी अधिक हैं वेभी प्रतिष्ठायुक्त इन गोत्रोंको बहुधा धारण किये हुए हैं और इस समय अपनी रीति नीति सुधारनेमें तत्पर हैं और परस्पर सम्मिलित आदि गुणोंसे विभूषित होते जाते हैं और विद्या आदिकी वृद्धि तथा कुलधर्म और विवाहादिकी रीति सुधारमें अतिशय यत्नवान् हैं । जिससे उन्नतिकी आशा बहुत कुछ पाई जाती है ॥

कान्यकुब्ज ब्राह्मण जो पूर्वकालमें विद्याविनयादिमें अपनी समान नहीं रखते थे, उनमें कुलमात्र अवशेष रह गया । संध्यावन्दन विद्या विवाहादिकी रीतिपर कुछ ध्यान नहीं देते और जो बुद्धिमान् महाशय इस विषयमें कुछ उद्योग करते हैं अनपढ लोग उनके मनोरथको सिद्ध नहीं होने देते यह हमको दुःख है ॥

सारस्वत पछादे आदि ब्राह्मणभी इस देशमें निवास करते हैं । इनकी वंशावली हमको प्राप्त नहीं हुई ॥

ये द्विजा जगृहुर्दानमधमानां द्विजोत्तम ।
लोभान्धाः पतितास्ते वै बभूवुर्वर्णब्राह्मणाः ॥

हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! जिन ब्राह्मणोंने लोभान्ध होकर अधम जनोंसे दान ग्रहण किया वे पतित होकर वर्णब्राह्मण कहाने लगे ॥

अग्रदानी ।

लोभी विप्रश्च शूद्राणामग्रे दानं गृहीतवान् ।
ग्रहणे मृतदानानामग्रदानी बभूव सः ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

जिन लोभी ब्राह्मणोंने शूद्रोंसे प्रथम दान ग्रहण किया है और मृतकका जिन्होंने दान ग्रहण किया वे अग्रदानी (कठचा) कहाये ॥

ग्रहविप्र ।

विप्रश्च ज्योतिर्गणनात् वेदनाच्च निरन्तरम् ।
वेदधर्मपरित्यक्तो बभूव गणको भुवि ॥

इति ब्रह्मवैवर्तपुराणम् ।

जिन्होंने निरन्तर ग्रहोंका गणन किया और मनके तापसे युक्त रहे वेदविहित धर्मको त्यागा वे गणकनामसे विख्यात हुए ॥

भट्ट ।

क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां भट्टो जातोऽनुवाचकः ।

इति युधिष्ठिरपरशुरामसंवादे जातिसङ्करलक्षणम् ।

क्षत्रियसे ब्राह्मणकन्यामें स्तुतिपाठक भट्ट जाति उत्पन्न हुई है॥

क्षत्रिय ।

क्षदति रक्षति जनान् क्षत्रः क्षद् संवृतो सौत्रः ततस्त्रासुसिति त्रः । क्षतात् त्रायते इति उमनीषादित्वात् क्षतान्त्याकारलोपे

वा क्षत्रः क्षत्रो द्वितकारः। पुंनपुंसकयोः क्षत्रः। क्षत्र एव क्षत्रियः स्वार्थे इयः अपत्यार्थे इय् इत्यन्ये ॥

मूर्द्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट्।

इत्यमरः।

ब्रह्माजीकी दोनों भुजाओंसे क्षत्रिय जाति उत्पन्न हुई है और यह दूसरा वर्ण है इनका अभिषेक होनेसे यह राजा कहे जाते हैं। ब्राह्मणोंकी समान इनकेभी उपनयनादि दश संस्कार होते हैं॥

क्षत्रजं सेवते कर्म वेदाध्ययनसंयुतः।
दानादानबहिर्यस्तु स वै क्षत्रिय उच्यते॥

इति पद्मपुराणम्।

जो क्षत्री जनोचित कर्मोंको करते हैं, वेदाध्ययनसम्पन्न हैं, जो दान करते हैं और लेते नहीं वेही क्षत्रिय कहाते हैं॥

अपरं च-क्षत्रियो हि प्रजा रक्षन् शस्त्रपाणिः प्रचण्डवत्।
विजित्य परसैन्यानि क्षितिं धर्मेण पालयेत्॥

इति पराशरसंहिता।

शस्त्रधारणपूर्वक क्षत्रियको प्रचण्डतासे शत्रुसेना जीतनी चाहिये प्रजाकी रक्षा करता हुआ धर्मसे पृथ्वीकी पालना करे॥

अपि च-नाध्यापयेदधीयीत प्रजाश्च परिपालयेत्।
नित्योद्युक्तो दस्युवधे रणे कुर्यात्पराक्रमम्॥

इति पाद्मे स्वर्गखण्डे २६ अध्यायः।

क्षत्रियको पढाना नहीं चाहिये किन्तु स्वयं वेद पढे, प्रजाकी पालना करे, दस्युदलोंके वधमें नित्य उद्यत रहे, युद्धमें पराक्रम करे, क्षत्रियोंमें सूर्य और चन्द्रवंश सम्प्रति प्रसिद्ध हैं। इन दोनों वंशकी शूरता, वीरता, पराक्रम, दया, दाक्षिण्य, उदारतादि तथा सद्गुणजनित यश कीर्ति रामायण महाभारत पुराणादिमें विस्तार-

पूर्वक है। पुरु, वृष्णि, भोज, अंधक, कुरु, यदु, अग्निकुलसंभव राना राठोर, सोलंकी, चौहान प्रभृति वंश यह सूर्य चन्द्रवंशकी शाखा प्रशाखामात्र है। ये बडे बली पराक्रमी हुए। पुराणोंमें इनकी बडी महिमा कही है ॥

क्षत्रियोंके जात्यन्तरका कारण ।

अवतारे षोडशमे पश्यन् ब्रह्मद्रुहो नृपान् ।
त्रिःसप्तकृत्वः कुपितो निःक्षत्रामकरोन्महीम् ॥

इति श्रीभागवते १ स्कन्धे २ अध्यायः ।

अन्यच्च–त्रिःसप्तकृत्वः पृथिवीं कृत्वा निःक्षत्रियां प्रभुः ।
समन्तपञ्चके चक्रे शोणितोदान् ह्रदान् नव ॥

इति श्रीभागवते ९ स्कन्धे १६ अध्यायः ।

अपि च–त्रिःसप्त कृत्वः पृथिवीं कृत्वा निःक्षत्रियां प्रभुः ।
समन्तपञ्चके पञ्च कृतवान् रुधिरैर्ह्रदान् ॥
स तेषु तर्पयामास पितॄन् भृगुकुलोद्वहः ।
साक्षात् ददर्श पितरं स च रामं न्यवारयत् ॥

इति पाद्मे भूमिखण्डे १२४ अध्यायः ।

भगवान्के सोलहवे अवतार परशुरामजीने इक्कीसवार क्षत्रियकुल उत्सादित किया कारण कि वे राजा ब्राह्मणोंसे द्वेष करने लगे थे और क्षत्रियोंके रुधिरसे समन्तपंचक नाम स्थानमें पांच ह्रद निर्माण कर और उनके रुधिरसे पूर्ण कर उससे पितरोंका तर्पण किया। उस समय पितरोंने दर्शन देकर इस कार्यसे उनको निवारण किया ॥

ऐसे विकराल समयमें बहुतसे क्षत्रियोंने कातरतापूर्वक अपनेको क्षत्रिय न कहा और क्षत्रियवृत्ति त्याग दी। जिसके निमित्त वे क्षत्रतेजसे रहित हो जात्यन्तरको प्राप्त हुए ॥

भागवत बारह स्कंधके १ अध्यायमें लिखा है कलिके सहस्र वर्ष जानेतक चन्द्रसूर्यवंशीय राजा प्रजायुक्त विद्यमान् थे। जब महानन्द राजाके शूद्रागर्भसे उत्पन्न पुत्र नन्दराजाने भारतका शासन किया, उस समय चाणक्य पण्डितने नन्द और उसके पुत्रगणोंको निहित किया और मुरुवंशीय चन्द्रगुप्तको राज्यसिंहासनपर आरोपित किया, उस नन्दसेही मानो क्षत्रियवंश शेषसा हुआ ॥

क्षत्ता तु सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायान्तु शूद्रजे ।

इत्यमरः ।

क्षत्ता नाम एक जाति है यह शूद्रके औरसमें क्षत्रियाके गर्भसे उत्पन्न होती है, इस कारण यह क्षत्रियसे पृथक् और निकृष्ट जाति है । भारतवर्षके उत्तर पश्चिम देशोंमें क्षत्रियजातिका निवास था । अयोध्या, हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, अवन्ती, शूरसेन, पांचाल, मत्स्य, विदर्भ, निषध, मथुरा, द्वारका, चेदि, मिथिला, मगध प्रभृति देशोंमें महाबलपराक्रमी क्षत्रिय नृपतिगण चक्रवर्ती रूपसे राजपालन करते थे। उस समय अयोध्या और राजपूतानेके अन्तर्गत चितौर, उज्जैन, उदयपुर, मेवाड प्रभृति स्थानोंमें राजपूतवंशीय अनेक क्षत्रिय विख्यात हो गये हैं ॥

वैश्य ।

उरव्या ऊरुजा अर्य्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।

इत्यमरः ।

उरव्य, ऊरुज, अर्य, वैश्य, भूमिस्पृश, विश यह वैश्योंके नामान्तर है वैश्यजाति ब्रह्माजीके उरु देशसे उत्पन्न हुई है यहभी द्विजातियोंके मध्यमें परिगणित और दशविध संस्कारसे संस्कृत होती है । व्युत्पत्तिः । विशति प्रविशति प्रान्तरादाविति विशधातोः क्विप् प्रत्यय करनेसे विश फिर स्वार्थमें ष्यन् करनेसे वैश्यशब्द सिद्ध होता है ॥

विशत्याशु पशुभ्यश्च कृष्यादानरुचिः शुचिः।
वेदाध्ययनसंपन्नः स वैश्य इति संज्ञितः॥
वैश्यस्य च प्रवक्ष्यामि यो धर्मो वेदसम्मतः।
दानमध्ययनं शौचं यज्ञश्च धनसंचयः॥
पालयेच्च पशून् वैश्यः पितृवद्धर्म्ममर्ज्जयन्।
विकर्म्म तद्भवेदन्यत् कर्म्म यत् स समाचरेत्॥

इति पाद्मे स्वर्गखण्डे वर्णविभागः २६ अध्यायः।

जो पशुओंकी पालनामें निरत रहे, कृषिकर्ममें प्रवृत्ति, जो शुचि और वेदाध्ययनसम्पन्न है वह वैश्यजाति है। वैश्योंका वेद-सम्मत धर्म कहता हूं। दान, अध्ययन, शौच, यज्ञ, धनसंचय करे और धर्मअर्ज्जनपूर्वक पितृवत् पशुओंकी पालना करे। इसके विरुद्ध करनेसे जो वह करेगा सो विकर्म कहा जायगा॥

अन्यच्च—दानमध्ययनं यज्ञो धर्मः क्षत्रियवैश्ययोः।
दण्डस्तथा क्षत्रियस्य कृषिर्वैश्यस्य शस्यते॥
स्थानमैन्द्रं क्षत्रियाणां संग्रामेष्वपलायिनम्।
वैश्यानां मारुतं स्थानं स्वधर्म्ममनुवर्त्तताम्॥

इति गारुडे ४९ अध्यायः।

दान, वेदपाठ, यज्ञ करना यह क्षत्रियवैश्यका धर्म है, परन्तु क्षत्रियको राज्यशासन, दण्ड और वैश्यको कृषि प्रशंसित है। संग्राममें न भागनेवाले क्षत्रियोंको इन्द्रलोक और अपने धर्म प्रति-पालन करनेवाले वैश्योंको मरुतलोक मिलता है॥

अपरं च—लोहकर्म्म तथा रत्नं गवां च प्रतिपालनम्।
वाणिज्यं कृषिकर्म्माणि वैश्यवृत्तिरुदाहृता॥

इति पराशरसंहिता।

लोहकर्म, रत्न, गोपालन और वाणिज्य तथा कृषिकर्म करना यह वैश्यवृत्ति वर्णन की है ॥

अपि च–स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः। इत्यमरः।

कृषिकार्य, पशुपालन और वाणिज्य व्यापार यह वैश्यवृत्ति है। वैश्यगणही वणिक् कहलाते हैं। उत्तर पश्चिम हमारे देशमें अनेक वैश्यजाति निवास करती है, मध्यदेशमेंभी वैश्य निवास करते हैं, शास्त्रोंमें वैश्योंके जो धर्म निरूपण किये हैं ये अपने पुरुषोंके मार्गपर चलते हैं। वाणिज्य और महाजनी इनका प्रधान व्यवसाय है। यह यज्ञोपवीत धारण करते और इनके आचार व्यवहार धर्मपूर्वक रहे हैं ॥

इस देशमें आदिम निवासी प्रकृत वैश्य अति विरल हैं। इस समय जो वैश्यजाति दृष्टिगोचर होती है उसमें अग्रवाल वैश्यविशेष विख्यात और व्यवसायी देखे जाते हैं। वर्णविवेकचन्द्रिकामें लिखा है ॥

उरुदेशात्समुत्पन्नो ब्रह्मणः प्राणवल्लभे।
भलन्दनेति विख्यातस्तस्य पत्नी मरुत्वती ॥
वत्सप्रीतिसुतस्तस्य प्रांशुस्तस्याऽभवत्सुतः।
प्रांशोः पुत्राः षडासन्वै तेषां नामानि मे शृणु ॥
मोदः प्रमोदो बालश्च मोदनश्च प्रमर्दनः।
शंकुकर्णेति विख्यातस्तेषां कर्म पृथक् पृथक् ॥
प्रमर्दनोऽनपत्यश्च भार्यया चन्द्रसेनया।
तपश्चचार सुमहत्पुण्ये बदरिकाश्रमे ॥
तत्रागतो महादेवो वरं ब्रूहीति चाब्रवीत्।
पुत्रं मे देहि भगवंस्तथास्त्विति शिवोऽब्रवीत् ॥

अग्निकुण्डात्समुद्भूतास्त्रयः पुत्राः सुधार्मिकाः ।
अग्रवालेति खत्री च रौनियारेति संज्ञकाः ॥
बालपुत्राश्च दुर्धर्षा गिरिकाननचारिणः ।
कोलभिल्लेति विख्यातः नीचवृत्तिं समाश्रिताः ॥

ब्रह्माजीके उरु स्थानसे भलन्दन उत्पन्न हुआ, उसकी स्त्री मरुत्वती थी; उसका पुत्र वत्सप्रीति उसका पुत्र प्रांशु हुआ। प्रांशुके छः पुत्र हुए। मोद, प्रमोद, बाल, मोदन, प्रमर्दन, शंकुकर्ण ये विख्यात हुए। प्रमर्दनके पुत्र कोई नहीं था, उसने अपनी चन्द्रसेना स्त्रीके साथ बद्रिकाश्रममें तप किया। वहां आनकर शिवजीने वरदानके निमित्त कहा जिसपर उन्होंने पुत्रका वर मांगा। शिवने तथास्तु कहा। उसके यज्ञमें अग्निकुंडसे अग्रवाल, खत्री, रौनियार ये तीन पुत्र हुए। कालके पुत्र नीचवृत्ति करने लगे थे, वह गिरिकाननमें विचरे और कोल भिल्ल नामसे विख्यात हुए। मोदका पुत्र वित्तकर्ण उसका विविंशति हुआ। उसके पुत्र पौत्र गोपवंशमें प्रतिष्ठित हुए। इसी वंशमें नन्दरायने जन्म लिया है ॥

श्रीयुत भारतभूषण भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजीरचित अगरवालोंकी उत्पत्ति इस प्रकार है कि, वैश्योंमें पहला मनुष्य धनपाल था जो ब्राह्मणोंद्वारा प्रतापनगरमें राजसिंहासनपर आरूढ कराया गया। इसके आठ पुत्र और एक कन्या हुई, कन्याका नाम मुकटा था। शिव, नल, अनिल, नन्द, कुन्द, कुमुद, वल्लभ और शेखर ये आठ पुत्र हुए। कन्या याज्ञवल्क्यको परिणित हुई और पुत्रोंको शालिहोत्र विद्याके आचार्यने व्याह दिया। वे पद्मावती, मालती, कान्ती, शुभ्रा, भव्या, भवा, रजा और सुंदरी नामवाली थीं। यही वैश्योंकी माता हैं। इनमें नल योगी होकर वनको चला गया और शेष पुत्रोंने राज्य पाया। जम्बूद्वीपके मध्यमें शिवके कुलका विश्य राजा हुआ। विश्यके वैश्य हुआ। इस वंशमें सुदर्शन बडा वि-

ख्यात हुआ । इसका पुत्र धुरन्धर, धुरन्धरका परपोता समाधि नाम वैश्य हुआ । जिसने कावेरीके तटपर अनेक मन्दिर बनाये । इसका परपोता नेमिनाथ हुआ, इससे नयपाल प्रसिद्ध हुआ । इसका पुत्र वृन्द हुआ इस वंशमें गुर्जर बडा प्रसिद्ध हुआ । इसके वंशमें हीर राजा हुआ जिसके रंग आदि सौ पुत्र थे । जिसमें रंग राजा हुआ शेष नीच कर्म करनेसे शूद्रवत् हो गये । फिर तप करके इन्होंने वंश चलाये परन्तु उनके वंशके वैश्योंके कर्म शूद्रवत् थे । रंगका पुत्र विशोक उसका मधु, मधुका महीधर हुआ जिसने शिवजीसे वर पाया । इसी वंशमें वल्लभ राजा हुआ इसीके घरमें प्रतापवान् अग्रराजा हुए । यह प्रतापनगरके अधिकारी हुए । नागोंका राजा कुमुद अपनी कन्या लेकर भूलोकमें आया और माधवीकन्याको राजा अग्रको दे दिया इसी कारण अग्रवाले सर्पोंको मामा कहते हैं । इसने अनेक तीर्थ किये तथा महालक्ष्मीकी उपासना करके वर पाया कि, विशेषकर तेरे वंशमें लक्ष्मी रहेगी, फिर यह कोलापुर गया वहां महीधरकी कन्याओंसे व्याह किया । आगरेसे पंजाबके सिरेतक अधिकार कर अपना वंश फैलाया तथा लक्ष्मीकी तपस्या कर अपने नामसे वंश चलानेका वर पाया और लक्ष्मीके कहनेसे दीपमालिकाको वैश्योंमें लक्ष्मीका पूजन प्रचार किया । आगरा, दिल्ली, गुडगांव (गौडग्राम वा गुरुग्राम), मेरठ (मयराष्ट्र), रोहतक (रोहिताश्व), हांसी, हिंसार (हिंसारी), पानीपत (पुण्यपत्तन), करनाल, कोरकांगडा (नगरकोट), लाहौर (लवपुर), मण्डी (रैवालसर तीर्थके निकट), विलासपुर, गढवाल, जींदसपीदम, नाभा, नारनौल (नारिनवल), अग्रनगर ये अग्रवालोंके रहनेके मुख्य स्थान हैं ॥

अग्रसेनने साढे सत्रह यज्ञ किये । विघ्नवश अठारहवां पूरा न हुआ, इसीसे साढे सत्रह गोत्र कहाते हैं । कोई कहते हैं गोत्रमें विवाह कर लेनेसे बडोंने एक गोत्रके दो भाग कर दिये इससे

साढे सत्रह गोत्र पवित्र हुए । वे इस प्रकार हैं । गर्ग, गोयल, गावाल, वात्सिल, कासिल, सिंहल, मंगल, मद्दल, तिंगल, एरण, ठिंगल, तितल, मित्तल, तुन्दल, जापल, गोभिल और गवन अर्थात् गोइन आधा गोत्र है । इन नामोंमें कुछ उलट फेरभी हो गया है । इनके पुरोहित गौड ब्राह्मण हुए । इस वंशमें दिवाकर राजा जैनियोंकी सातोंमें आकर जैनी हो गया । इसके साथी कोई २ जैनी हो गये इसी कारण कोई अग्रवाल वेदधर्मपराङ्मुख होनेसे जैनी दीखते हैं । शहाबुदीनकी चढाईसे यह जाति बडे संकटमें पडी, राज्य नष्ट हुआ, बहुतोंने धर्म छोड दिये, यज्ञोपवीत तोड डाले तथा मारवाड और पूर्वमें जावसे इस कारण मारवाड पूरव आदि देशोंमें अग्रवाल निवास करने लगे यह संक्षेप कर लिखा है॥

अग्रवालोंके सिवाय वैश्योंकी औरभी अनेक जाति हैं जिनका वृत्तान्त सम्यक् प्राप्त न होनेसे हम इस स्थलमें प्रगट नहीं कर सक्ते । मिलनेपर प्रकाशित करेंगे ॥

माथुर (माहुर), गही (धोई), रौतगी (चतुर्थश्रेणी), चौसेनी, माहेश्वरी, दूसर, दससे (दशश्रेणी), बारहसेनी (द्वादशश्रेणी) आदि वैश्यजातिके भेद कहे जाते हैं परन्तु इनमें यज्ञोपवीत संस्कार बहुधा नहीं होते। देखादेखी अब कुछ २ करने लगे हैं ॥

खत्री वा क्षत्रिय ।

खत्रीजाति जो इस ओर बहुत प्रसिद्ध और धनाढ्य गिनी जाती है। कहते हैं कि यह शब्द क्षत्रियकाही बिगडकर खत्री हो गया है । परशुरामके भयसेही इन्होंने अपना क्षत्रियधर्म त्याग दिया है । इस समय यह लोग प्रतिष्ठित व्यवहारमें निपुण और धनाढ्य हैं परन्तु खत्रीजातिमें यज्ञोपवीत रहित कोईभी नहीं है और पूरे सब संस्कार होते हैं इससे इनके क्षत्रियपदमें विशेषकर यह जाति पंजाबमें और पश्चिमतरमें अधिक निवास करती है ।

और संस्कारयुक्त होनेसे अपने अपने वंशका तेज इनमें वर्तमान है । सारस्वत ब्राह्मण इनके पुरोहित हैं । श्रीहर्षमें लिखा है कि ब्रह्मलोकमें एक समय दुर्वासाके मुखसे कोई शब्द अशुद्ध निकल गया उसपर सरस्वती हँसी, इसपर दुर्वासाने उसको शाप दिया कि तुम मानुषी हो । सरस्वती शापवश मनुष्यलोकमें आई और ऋषिकुमारसे परिणीत हुई उससे जो सन्तान हुई वह सारस्वत ब्राह्मणके नामसे विख्यात हुई । यह वृत्तान्त हर्षचरित्रके आदिमें लिखा है ॥

विचार बहुतसी अपनेको द्विजातियोंमें बताती हैं तथा बहुत अपनेको क्षत्री कहते हैं और म्लेच्छोंका भयही अपने संस्कारकी हीनताका वर्णन करते हैं, इसमें हमको यह कहना है कि यवनोंके कठिन शासनमें सबसे अधिक विपत्ति ब्राह्मणजातिपर पडी थी और जातियोंपर ऐसी कठिनाई नहीं पडी थी परन्तु कोईभी ब्राह्मणकुल यज्ञोपवीत संस्कारहीन नहीं हुआ फिर क्या कारण है कि दूसरी जाति संस्कारहीन हो गई । जो कहते हैं परशुरामके भयसे हमने अपना कृत्य छोड दिया । परशुरामके समय लोग संस्कारसे भ्रष्ट नहीं हुए थे । हां कर्मभ्रष्ट हुए थे सोभी क्षत्रिय-जातिने अपनेको छिपाया था और परशुरामके तप करनेके निमित्त जानेपर फिर पूर्ववत् क्षत्रियबल दिगादिगन्तमें व्याप्त हो गया था और द्वापर युगपर्यंत क्षत्रियोंका प्रभाव पूर्णरूपसे जागरूक था। जिसमें अपनी २ उन्नति सब क्षत्रियोंने पूर्णरूपसे कर ली थी, फिर क्या कारण हुआ कि, सूत्रहीन हुए । हिन्दू आर्य्यजाति यदि सूत्र त्याग बैठी और म्लेच्छोंके डरसे यज्ञोपवीत त्याग दिया तो उनकी शिखाका संस्कार आजतक क्यों वर्तमान है । इससे हमको यह बात ठीक विदित नहीं होती कि म्लेच्छोंके भयसेही यज्ञोप-वीत छोड दिये । ब्राह्मणोंने क्यों नहीं छोडे इस कारण हमको उनके द्विजाति होनेमें सन्देह होता है ॥

तीन वर्णकी शुद्धताका एक यह प्रमाण शास्त्रसे विदित होता है कि, जिनमें कराब नहीं होता अर्थात् पतिके परलोकगमन होनेपर स्त्री दूसरा पति नहीं करती वही कुल द्विजाती कहे जाते हैं और जिन कुलोंमें कराब होता है वे द्विजाति नहीं हैं क्योंकि ॥

नोद्वाहिकेषु मंत्रेषु नियोगो दृश्यते क्वचित् ।
न विवाहविधावुक्तं विधवावेदनं पुनः ॥
नान्यस्मिन् विधवा नारी नियोक्तव्या द्विजातिभिः।
अन्यस्मिन् हि नियुंजाना धर्मं हन्ति सनातनम् ॥

इति मनुः ।

विवाहमंत्रोंमें कहीं नियोग नहीं दीखता, न विधवाके विवाहका कहीं विधान वेदमें दीखता है । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीन वर्णोंको विधवाका नियोग न कराना ऐसा करनेसे सनातन धर्म नष्ट होता है । इन मनुजीके वचनोंसे प्रगट है कि, जिन कुलोंमें कराबकी रीति है वे द्विजाति नहीं हैं और तीन वर्णोंमें दूसरे पतिकी रीति नहीं है और तीन वर्णोंमें इसको अनुमोदन नहीं करते यही एक बडा प्रमाण है । विष्णोई तगे यह दो जातिभी अपनेको उच्च वर्ण कहती है परन्तु इसका प्रमाण चिन्त्य है खोजकर दूसरे भागमें लिखा जायगा आचारविचार इस जातिके अच्छे हैं ॥

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।

इत्यमरः ।

शूद्र, अवरवर्ण, वृषल, जघन्यज ये शूद्रके नाम हैं ।

शूद्राणां द्विजशुश्रूषा परो धर्मः प्रकीर्त्तितः ।
अन्यथा कुरुते किञ्चित्तद्भवेत्तस्य निष्फलम् ॥

इति पराशरसंहिता ।

द्विजातियोंकी सेवा करनाही शूद्रोंका परम धर्म है इसके सिवाय जो वह और कुछ करता है वह निष्फल होता है ॥

अपरं च-विप्राणामर्च्चनं नित्यं शूद्रधर्मो विधीयते ।
तद्द्वेषी तद्धनग्राही शूद्रश्चाण्डालतां व्रजेत् ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

ब्राह्मणोंकी नित्य अर्चा सेवा करनीही शूद्रोंका धर्म कहा है और ब्राह्मणद्वेषी तथा ब्राह्मणका धन वृथा ग्रहण करनेसे चाण्डाल हो जाता है ॥

अपि च-शुश्रूषैव द्विजातीनां शूद्राणां धर्म्मसाधनम् ।
कारुकर्म्म तथा जीवः पाकयज्ञोऽपि धर्म्मतः॥

इति गारुडे ४८ अध्याय ।

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंकी शुश्रूषाही शूद्रोंका धर्म लाभका उपाय है । शिल्पकर्म इनकी जीविका और पाकयज्ञमें धर्मानुसार इनका कुछ अधिकार है । आटा माढना शाकभाजी प्रस्तुत करना आदि ॥

कलियुगमें प्राकृत शूद्रजाति दृष्टिगोचर नहीं होती। शूद्र ब्रह्माके चरणोंसे उत्पन्न हुए हैं इस कारण यह आदिम और अमिश्रवर्ण हैं। इस समय जो जाति शूद्र कहकर परिगणित होती है वह प्रकृति शूद्र नहीं किन्तु विभिन्न जातीय स्त्रीपुरुषोंके संयोगद्वारा उत्पन्न हैं इस कारण उसको संकरजाति कह सक्ते हैं ॥

कायस्थजाति ।

कायस्थजाति किस वर्णमें है इसका विवाद अनेक ग्रंथोंमें अनेक प्रकारसे लिखा हुआ है । कोई कहते हैं क्षत्रिय हैं, कोई कहते हैं शूद्र हैं और अनेक कहते हैं इन दोनोंसे अतिरिक्त हैं, इस कारण इस जातिके निर्णयमें विवाद है इस कारण हम इस विषयमें कोई अपना मत प्रगट नहीं करते । केवल शास्त्रोंके वचन पाठकोंके सामने रखते हैं । जिसके देखनेसे पाठक निश्चय कर

सकते हैं । कायस्थजाति शस्त्र धारण नहीं करती किन्तु लेखन कर्ममें निपुण है । बहुधा मद्यमांसमें रुचि अधिक रखते हैं पर अब छोडते जाते हैं। कोई यज्ञोपवीत धारण करने लगे हैं। कुलकी श्रेष्ठताकी परीक्षा वैश्यजातिमें लिख चुके हैं ॥

ब्रह्मपादांशतो जन्म चातः कायस्थनामभृत् ।
ककारं ब्राह्मणं विद्यादाकारं नित्यसंज्ञकम् ॥
आयन्तु निकटं ज्ञेयं तत्र काये हि तिष्ठति ।
कायस्थोऽतः समाख्यातो मसीशं प्रोक्तवांश्च यम् ॥
जीवे क्षणे भृगुपदे जन्मत्वात् शोभना धियः ।
शठश्च शूरता किंचिदनेकप्रतिपालकृत् ॥
जन्मावधि द्विजार्चायां मतिरेव निरन्तरम् ।
कुशासनादि सकलं गृहीत्वा मस्तकोपरि ॥
अनुगच्छामि सततमिति चिन्तामनाः सदा ।
शठत्वाच्चतुरत्वाच्च विप्रसेवामनुक्षणम् ।
वाञ्छत्येवमसीशः स सदोद्वेगीतिमावहन् ॥

इति आचारनिर्णयतंत्रम् ।

ब्रह्माजीके पादांशसे जन्म लेकर इन्होंने कायस्थ नाम धारण किया है । ककार शब्दसे ब्रह्मा, आकारशब्दसे नित्य और आयका अर्थ निकट है । ब्रह्माकी कायामें स्थित होनेसे यह कायस्थ नामसे विख्यात हुए यह मसीशनामसेभी पुकारे गये । बृहस्पतिकी दृष्टि और शुक्रके अंशसे जन्मके हेतुवाले कायस्थ विलक्षण बुद्धिमान् हैं । इनमें वीरत्व और कुछ शठता होती है तथा बहुतोंके पालक होते हैं । जन्मसे ब्राह्मणसेवामें रत हैं कुशासनादि मस्तकके ऊपर ग्रहण करके सदा ब्राह्मणोंके पीछे

अनुगमनकी इनकी इच्छा रही । शठता चतुरता प्रयुक्त मसीश कुशासनादि वहनपूर्वक सदा द्विजसेवाकी वांछा करते हैं ॥

तवाश्रमे महाभाग सगर्भा स्त्री समागता ।
चन्द्रसेनस्य राजर्षेः क्षत्रियस्य महात्मनः ॥
तन्मे त्वं प्रार्थितं देहि हिंसेयं तां महामुने ।
ततो दाल्भ्यः प्रत्युवाच ददामि तव वाञ्छितम् ॥

दाल्भ्य उवाच ।

स्त्रियं गर्भममुं बालं तन्मे त्वं दातुमर्हसि ।
ततो रामोऽब्रवीद् दाल्भ्यं यदर्थमहमागतः ॥
क्षत्रियान्तकरश्चाहं तत् त्वं याचितवानसि ।
प्रार्थितश्च त्वया विप्र कायस्थो गर्भ उत्तमः ॥
तस्मात् कायस्थ इत्याख्या भविष्यति शिशोः शुभा।
एवं रामो महाबाहुर्हित्वा तं गर्भमुत्तमम् ॥
निर्जगामाश्रमात् तस्मात् क्षत्रियान्तकरः प्रभुः ।
कायस्थ एष उत्पन्नः क्षत्रियां क्षत्रियात्ततः ॥
रामाज्ञया स दाल्भ्येन क्षत्रधर्म्माद्बहिष्कृतः ।
कायस्थधर्म्मोऽस्मै दत्तश्चित्रगुप्तश्च यः स्मृतः ॥
तद्गोत्रजाश्च कायस्था दाल्भ्यगोत्रास्ततोऽभवन् ।
दाल्भ्योपदेशतस्ते वै धर्म्मिष्ठाः सत्यवादिनः ॥
सदाचारपरा नित्यं रता हरिहरार्चने ।
देवविप्रपितॄणां च अतिथीनां च पूजकाः॥

इति स्कान्दे रेणुकामाहात्म्यम् ।

दाल्भ्यके प्रति रामवाक्य हे महाभाग! आपके आश्रममें क्षत्रिय-वंशसम्भूत महात्मा राजर्षि चन्द्रसेनकी सगर्भा स्त्री आई है सो उसे आप मुझे दो मैं उसके पुत्रको नष्ट करूंगा। दाल्भ्य बोले। हम आपको वांछित वस्तु दान करते हैं एक हमारी प्रार्थना है। परशुराम बोले क्या? दाल्भ्य बोले कि आप हमको यह स्त्री और इस गर्भ-स्थ बालकको दीजिये। परशुरामजी बोले। हम जिस निमित्त आये हैं वही आपने हमसे मांगा, मैं क्षत्रियान्तकर्ता हूं इसकी कायामें उत्तम गर्भ स्थित है इस कारण इस बालकका नाम कायस्थ होगा, इस प्रकार कहकर क्षत्रियान्तकारी तेजस्वी महाबाहु राम उस गर्भको परित्यागपूर्वक आश्रमसे चले गये। उस क्षत्रियाके गर्भसे वह कायस्थ नाम बालक उत्पन्न हुआ। परशुरामकी आ-ज्ञासे दाल्भ्यने उसको क्षत्रिय धर्मसे बहार किया, इसको काय-स्थधर्म दिया। यही चित्रगुप्त नामसे विख्यात हुआ। इसके वंशमें उत्पन्न हुए कायस्थ दाल्भ्य गोत्री कहाये और दाल्भ्यके उपदेशसे यह सब धर्मिष्ठ सत्यवादी सदाचारपरायण हरपूजनमें तत्पर देवता, पितर, ब्राह्मण और अतिथियोंके पूजक हुए ॥

सुतपा उवाच ।

हे सुयज्ञ नृपश्रेष्ठ ब्राह्मणातिप्रियो नृप ।
पश्यैतान् विप्र भृत्यांस्त्वमासनादिशिरोधृतान् ॥
एतद् घोरकलावेते भविष्यन्ति द्विजार्चकाः ।
जात्या मसीशाः कायस्था ब्राह्मणेश्वरमानसाः ॥
महाविद्योपासकाश्च गुणतः क्षत्रियोपमाः ।
कलौ हि क्षत्रियाभावात् वैश्याभावाच्च सुव्रत ॥
एते भक्त्या भविष्यन्ति विप्रा मानासहिष्णवः ।
विप्रप्रिया विप्रभक्ता विप्रमानप्रदा यतः ॥

महाविद्यान्वितश्चैते क्षत्रकर्मकृतः कलौ।
मस्या एवेशमस्येति मसीश इतिसंज्ञकः॥
ब्रह्मणो विप्रमूर्त्तेस्तु पादांशे सम्भवन्ति तत्।
कायस्था इति संज्ञाः स्युः सुयज्ञैषां शिवा मतिः॥

इति आचारनिर्णयतंत्रम्।

हे ब्राह्मणोंमें अनुरक्त नृपश्रेष्ठ सुयश! मस्तकपर आसनादिधारी इन ब्राह्मणोंके भृत्योंको अवलोकन करो। इस घोर कलिकालमें यह ब्राह्मणोंके पूजक होंगे जातिसे मसीश कायस्थ ब्राह्मणोंमें ईश्वर बुद्धि रक्खेंगे महाविद्याके उपासक गुणोंमें क्षत्रियोंकी समान हे सुव्रत! कलियुगमें वैश्यक्षत्रियोंके अभावसे ब्राह्मणोंका मान यही सहेंगे। विप्रप्रिय ब्राह्मणोंके भक्त तथा ब्राह्मणोंके मान देनेवाले महाविद्याके उपासक क्षत्रकर्मके करनेवाले मसिद्वारा इनकी प्रभुताई करेंगे इससे इनका नाम मसीश और विप्रमूर्ति ब्रह्माके चरणोंसे उत्पन्न होनेसे ये कायस्थ हैं इनकी मंगलमयी मति है॥

आदौ प्रजापतेर्जाता मुखाद्विप्राः सदारकाः।
बाहोश्च क्षत्रिया जाता उर्वोर्वैश्या विजज्ञिरे॥
पादाच्छूद्रश्च सम्भूतस्त्रिवर्णस्य च सेवकः।
हीमनामा सुतस्तस्य प्रदीपस्तस्य पुत्रकः॥
कायस्थस्तस्य पुत्रोऽभूद्बभूव लिपिकारकः।
कायस्थस्य त्रयः पुत्रा विख्याता जगतीतले॥
चित्रगुप्तश्चित्रसेनो विचित्रश्च तथैव च।
चित्रगुप्तो गतः स्वर्गे विचित्रो नागसन्निधौ।
चित्रसेनः पृथिव्यां वै इति शूद्रः प्रचक्ष्यते॥

वसुर्घोषो गुहो मित्रो दत्तः करण एव च ।
मृत्युञ्जयश्च सप्तैते चित्रसेनसुता भुवि ॥

इति जातिमालाधृतअग्निपुराणम् ।

प्रथम प्रजापतिके मुखसे सस्त्रीक ब्राह्मण उत्पन्न हुए । बाहुसे क्षत्रिय, ऊरुसे वैश्य, चरणोंसे तीनों वर्णोंके सेवक शूद्र हुए । शूद्रका पुत्र हीम, हीमका प्रदीप, उसका पुत्र लेखक कार्यकर्ता कायस्थ हुआ । कायस्थके तीन पुत्र हुए । चित्रगुप्त, चित्रसेन और विचित्र । चित्रगुप्त स्वर्गमें, विचित्र नागलोकमें, चित्रसेन पृथ्वीमें रहा इस प्रकार शूद्र कहाते हैं । वसु, घोष, गुह, मित्र, दत्त, करण, मृत्युञ्जय ये सात चित्रसेनके पुत्र भूमिमें विख्यात हुए ॥

क्षणं ध्यानस्थितस्यास्य सर्वकायाद्विनिर्गतः ।
दिव्यरूपः पुमान् हस्ते मसीपात्रं च लेखनी ॥
चित्रगुप्त इति ख्यातो धर्म्मराजसमीपतः ।
प्राणिनां सदसत्कर्म्म लेख्याय स निरूपितः ॥
ब्रह्मकायोद्भवो यस्मात् कायस्थो वर्ण उच्यते ।
नानागोत्राश्च तद्वंश्याः कायस्था भुवि सन्ति वै ॥

इति पद्मपुराणम् ।

ब्रह्माजीके क्षणमात्र ध्यान करनेसे दिव्यरूप एक पुरुष हाथमें लेखनी और मसीपात्र लिये प्रगट हुआ । ब्रह्माजीने उसका चित्रगुप्त नाम रख धर्मराजके समीप भेज दिया वह प्राणियोंके सत् असत् कर्म लिखने लगे ॥

ब्रह्माजीकी कायासे होनेसे यह कायस्थ कहलाये । अनेक गोत्रके इनके वंश पृथ्वीमें विख्यात हुए हैं और पुराणोंमेंभी कायस्थोंकी उत्पत्ति लिखी है परन्तु जितने वचन इस समयतक हम लिख चुके हैं इन वचनोंसे द्वितीय वर्ण होना सम्यक् प्रकारसे

निश्चय नहीं होता और इन्हीं वचनोंके प्रमाणसे कायस्थोंको निकृष्ट ज्ञातिभी नहीं कह सक्ते कारण कि।

"विद्यावन्तः शुचिर्धीरो दाता परोपकारकः।
राजभक्तः क्षमाशीलः कायस्थः सप्तलक्षणः॥"

विद्यावान्, पवित्र, धीर, दाता, परोपकारी, राजभक्त, क्षमाशील होना ये कायस्थोंके सात लक्षण हैं। बंगालमें राठी और वारेन्द्र ब्राह्मणोंकी जो कथा है इसी प्रकार कायस्थोंकी है। गोडेश्वर राजा आदिशूरके पुत्रेष्टि यज्ञमें कान्यकुब्जसे ब्राह्मण आये थे इन पांच ब्राह्मणोंके साथ पांच पुरुष औरभी आये थे। कोई २ कहते हैं वे पांचों भृत्य थे कोई कहते हैं ब्राह्मणोंके शरीररक्षक थे। जो कुछभी हो उनका परिचय नीचे लिखे श्लोकोंसे पाठकगण भली प्रकार प्राप्त कर सकेंगे इसी कारण वे कारिका नीचे लिखते हैं॥

सुकृतालिकृताम्बर एष कृती क्षितिदेवपदाम्बुजचारुरतिः। मकरन्द इति प्रतिभाति यतिर्द्विजवन्द्यकुलोद्भवभट्टगतिः॥ स च घोषकुलाम्बुजभानुरयं प्रथितेन्दुयशः सुरलोकवशः। सततं सुसुखी सुमतिश्च सुधीः शरदिन्दुपयोऽम्बुधिकुन्दयशाः॥ वसुधाधिपचक्रवर्त्तिनो वसुतुल्या वसुवंशसम्भवाः। वसुधा विदिता गुणार्णवैर्नियतं ते जयिनो भवन्तु नः॥ दशरथो विदितो जगतीतले दशरथप्रथितः प्रथमः कुले। दशदिशां जयिनां यशसा जयी विजयते विभवैः कुलसागरे॥
यशस्विनां यशोधरः सदा हि सर्वसादरः।
प्रमत्तसत्वमत्तहः शरत्सुधांशुवद् यशः॥

प्रतापतापनोत्तपद्विषालियोषिदालिको
विभाति मित्रवंशसिन्धुकालिदासचन्द्रकः ।
द्विजालिपालनार्थकोऽप्यसौ च हर्षसेवकः
कुलाम्बुजप्रकाशको यथान्धकारदीपकः ॥
अयं गुहकुलोद्भवो दशरथाभिधानो महान्
कुलाम्बुजमधुव्रतो विविधपुण्यपुंजान्वितः ।
निशम्य गुहभाषितं सकलसख्यहास्यं व्यभूत्
स वङ्गगमनोद्यतो विविधमानभङ्गो यतः ॥

इति शब्दकल्पद्रुमधृतदक्षिणराढीयघटककारिका ।

यह पुण्यात्मा कृतकृत्य ब्राह्मणोंका चरणसेवी मकरन्दकी तुल्य सौरभयुक्त यति द्विजोंसे वन्दित कुलमें उत्पन्न भट्टगति, वह यह घोष कुलके खिलानेको सूर्य है और घोष नाम है। चन्द्रमाकी समान इनका यश विख्यात सुरलोकका वश करनेवाला है सदा सुमुख बुद्धिमान् शरदके चंद्रमारूप सागरमें इनका यश कुन्दकी समान मकरंद नामवाला है । हे राजन् ! चक्रवर्ति वसुकी समान वसुवंशमें उत्पन्न गुणसमूहोंसे भूमिमें विख्यात ये वस है नित्य जयी है । भूमिमें दशरथ बडे विख्यात हुए वह कुलमें प्रथम विख्यात हुए जिस जयीने यशसे दशों दिशा जीती वह कुल सागरमें विभवोंसे जयको प्राप्त हो यशस्वियोंका यश धारण करनेवाला सदा सर्वका आदर करनेवाला प्रमत्त सत्व मत्त दूर करता शरदके चंद्रमाकी समान यशस्वी है। जिनके प्रतापका सूर्य तपता है, शत्रुओंकी स्त्रियोंको शोक करता मित्रका वंश शोभित होता है। यह मित्र है, कालिदासका वंश चन्द्रमा सिन्धुमें जैसे शोभित हो तैसे है ब्राह्मणोंका पालक यह हर्ष सेवक है, कुलकमलका प्रकाशक है जैसे अन्धकारमें दीप प्रकाश करता है यह गुरुकुलमें उत्पन्न दशरथ नामवाला है। अपने कुलकमलको भ्रमर अनेक

पुण्यसमूहसे युक्त है । गुहके वचन सुन सब सभा हँसे और वह अपमान समझ पूर्व वंगको चला गया इस कथनसे यह साधारण लोक नहीं विदित होते ॥

अहं च पुरुषोत्तमः कुलभृदग्रगण्यः कृती
सुदत्तकुलसंभवो निखिलशास्त्रविद्योत्तमः ।
विलोकितुमिहागतो द्विजवरैश्च राज्यं प्रभो
चकार नृपतिः स तं विनयहीनतो निष्कुलम् ॥

इति कुलदीपिका ।

उन सहचरोंके मध्यमें एकने इस प्रकार अपना परिचय दिया कि, हे प्रभो ! हमारा नाम पुरुषोत्तम, मैं उत्तम दत्तवंशमें उत्पन्न, कुलधारियोंमें श्रेष्ठ, कृती, सब शास्त्रका ज्ञाता, क्रियावान् हूं । ब्राह्मणोंके सहित आपके दर्शन करनेको आया हूं । यह वचन सुन राजाने उसको विनयहीन देखकर कुलहीन (अकुलीन) कर दिया। इस धृष्टताके कथनमेंभी विदित होता है कि, यह कोई निकृष्ट भृत्य नहीं थे। जो कुछभी हो कान्यकुब्जसे बंगालमें गये। इन पांच कायस्थोंके नाम मकरन्द, घोष, दशरथ, वसु, कालिदासमित्र, दशरथ वा विराट गुह और पुरुषोत्तमदत्त थे । यथाक्रमसे इनके गोत्र सुकालिन्, गौतम, विश्वामित्र, काश्यप और मौद्गल्य हैं। राजा आदिशूरने ब्राह्मणोंकी समान इन पांचोंको पांच ग्राम और यथोचित वृत्ति देकर इनको वहां स्थित किया । बंगाली कायस्थगण इन्हीं पांच महात्माओंकी सन्तति है ॥

इसके पांच छः पुरुष बीचनेपर बल्लालसेनने कौलीनप्रथा चलाई उन्होंने ब्राह्मणोंकी समान कायस्थोंमेंभी जिनमें आचार, विनय, विद्या प्रभृति गुण देखे उनकोही कौलिनमर्यादा प्रदान की । इसकेही अनुसार घोष, वसु और मित्र इन तीन घरोंको कौलीनमर्यादा प्राप्त हुई। दत्तसे राजाने पूछा उसने कहा संग आये है इसे

अधिक क्या परिचय होगा ? राजाने उद्धत उत्तर सुन उसको कुलीनतासे बाहर किया । गुहके परिचय देते समय सभा गुहनामसे हँस पडी इस कारण यह पूर्व बंगालको चला गया ॥

कायस्थोंने अपने २ आदिपुरुषोंसे अधिष्ठित वासस्थानका एक एक समाज कल्पना किया और अपनेको उसी समाजका परिचय देते हैं ॥

घोषवंशके छट्ठे पुरुष प्रभाकर और निशापति यथाक्रमसे आकना और वाली नामक स्थानमें निवास करते हुए, इस कारण घोषवंशीय आकना और वाली ये दो समाजवाले कहाते हैं ॥

वसुवंशके पंचम पुरुष शक्ति और मुक्ति यथाक्रमसे वागान्ता और माइनगरमें निवास करते हुए, इस कारण वसुवंशके वागान्त और माइनगर ये दो समाज हैं ॥

मित्रवंशके अष्टम पुरुष हुइ और गुइ यथाक्रमसे बडिशा और टोका नामक स्थानमें निवास करने लगे । इस कारण मित्रवंशकी बडिशा और टोका यह दो समाज हैं ॥

दत्तवंशके प्रधान समाजवाली और नाउदा और गुहवंशका प्रधान समाज यशोहर है ॥

बंगालके मध्यमें यह विख्यात है ॥

अष्ट सिद्धमौलिक ।

गौडेष्टौ कीर्तिमन्तश्चिरवसतिकृता मौलिकाये हि सिद्धास्ते दत्ताः सेनदासाः करगुहसहिताः पालिताः सिंहदेवाः। ये वापाद्याभिमुख्याः स्थितिविनयजुषः सप्ततिस्ते द्विपूर्वा होडाद्या वीक्ष्य राज्ञा चरणगुणयुता मौलिकत्वेन साध्याः ॥

इति दक्षिणराढीयघटककारिका ।

गौडदेशमें दत्तसेनदास कर गुहपालित सिंह और देव यह आठ घर बहुकालके निवासी कीर्तिमान् सिद्धमौलिक कहाते हैं। होडादि पाद्य प्रधान नियम मर्यादा सम्पन्न कायस्थोंके वे बहत्तर घरोंको एक पादमात्र गुण दिखाकर साध्य मौलिक किया ॥

अथ द्विसप्ततिसाध्यमौलिक।

होडः स्वरधरधरणीवान् आईच सोमः पैसुरसा-
मः। भञ्जो विन्दो गुहबललोधशर्म्मा वर्म्मा हुई
भुई चन्द्रः॥ रुद्रो रक्षित राजादित्यो विष्णुर्नागः
खिलपिलगूतः। इन्द्रो गुप्तः पालो भद्र ओमश्चा-
ङ्कुर बन्धुरनाथः ॥ शांई हेशश्च मनोगण्डो राहा
राणा राहुत साना दाहा दाना गण उपमानाः ।
खामः क्षोमो घरवैतषो वीदस्तेजश्चार्णव आशः॥
शक्तिर्भूतो ब्रह्मः शानः क्षेमो हेमो वर्धनरङ्गः ।
गुहः कीर्तिर्यशः कुण्डुर्नन्दी शीलो धनुर्गुणः ॥

इति शब्दकल्पद्रुमधृतदक्षिणराठीयघटकारिका।

वे बहत्तर यह हैं। होड, स्वरधर, धरणीवान्, आईच, सोन, पैई, सुर, साम, भंज, विन्द, गुह, बल, लोध, शर्मा, वर्मा, हुई, भुई, चन्द्र, रुद्र, रहित, राजा आदित्य, विष्णु, नाग, खिल, पिल, गूत, इन्द्र, गुप्त, पालभद्र, ॐ, अंकुर, बन्धुर, नाथ, शाई, हेश, मन, गण्ड, राहा, राना, राहुत, साना, दाहा, दाना, गण, उपमाना, खाम, क्षौम, घर, वैतष, वीद, तेज, अर्णव, आश, शक्तिभूत, ब्रह्म, शान, क्षेम, हेम, वर्धन, रंग, गुह, कीर्ति, यश, कुण्ड, नन्दि, शील, धनु और गुण ॥

दक्षिणराठीय और बंगालके कायस्थोंके मध्यमें विशेष पृथ-

कता नहीं है तोभी दूर स्थानमें रहनेसे इनकी भिन्न २ सम्प्रदाय हो गई है। इस कारण उन दोनोंमें आदान प्रदानका चलन नहीं है॥

उत्तरराठीयकायस्थ।

उत्तरराठमें निवास करनेसे इनकी उत्तरराठीय संज्ञा हुई है। उत्तरराठीय कायस्थ गण अपनेको दक्षिण राढीय और बंगाली कायस्थोंके आदिपुरुषोंसे प्रगट होना स्वीकार नहीं करते। वह कहते कन्नोजवासी ब्राह्मणोंके साथ और पांच जन करन आये थे। यह उन पांच करनकी सन्तान है परन्तु इसका प्रमाण कहीं नहीं देखा जाता है और करण एक संकर जाति होती है। जैसे कि, अगले श्लोकसे यह वार्त्ता प्रगट होती है कि, ऐसा होनेसे संकर-जाति हो जायगी॥

आचाण्डालात्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः॥
शूद्राविशोस्तु करणो०—

इत्यमरः।

चण्डालपर्यन्त वक्ष्यमाण अम्बष्ठ करणादि संकीर्ण प्रतिलोम और अनुलोमसे उत्पन्न होनेसे संकरजाति होती है। शूद्रा स्त्रीमें वैश्यसे उत्पन्न पुत्र लेखनवृत्तिवाला करण कहलाता है। इस कथनसे उनका जो आशय हो उसको वेही जानते हैं॥

उत्तरराठीय कायस्थोंके सर्व शुद्ध साढे सात घर हैं। उनमें सुकालिन गोत्र घोष, वात्स्यगोत्र सिंह, विश्वामित्रगोत्र मित्र, काश्यपगोत्री दत्त और मौद्गल्यगोत्र दास ये पांच घर कान्यकुब्जसे आये हैं और शांडिल्यगोत्र घोष और काश्यपगोत्र दास ये दो घर और मौद्गल्यगोत्र कर और भरद्वाजगोत्र सिंह ये दो आधे घर हैं। सर्वशुद्ध ढाई घर बंगालके आदिम कायस्थ हैं। इनमें सुकालिन गोत्र घोष और वात्स्यगोत्र सिंह कुलीन हैं। अवशिष्ट साढे पांच घर मौलिक हैं॥

उत्तरराढीय कायस्थोंमें एक प्रथा थी कि समाजिक निमंत्रणमें कुटुम्बके घर भोजन नहीं करते थे। केवल निमंत्रित होकर कर्मकर्ताके स्थानमें आय प्रस्तुत व्यंजनको देख "उत्तम हुआ है" यह कहकर लौट जाते थे। आजकल यह प्रथा अनेक स्थानसे उठ गई है॥

वारेन्द्रकायस्थ।

वारेन्द्र कायस्थ बंगालमें बहुत पहलेसे वास करते हैं। उत्तरकालमें ये सब इस देशमें आये थे। ये और किसीसे न मिलकर अपनी सम्प्रदाय अलगही चलाते रहे। वारेन्द्रदेशमें निवास करनेसे वारेन्द्र कहाये॥

वारेन्द्रकायस्थ साढे सात घर हैं। उनमें दास, नन्दी, चाकी और शर्मा (आधा घर) ये साढे तीन घर कुलीन हैं। देव, दत्त, सिंह और नाग ये चार घर शुद्ध मौलिक हैं। ये संख्यामें बहुत थोडे हैं। नदिया, मुराशिदाबाद और राजसाही जिलेमें इस श्रेणीके कायस्थ मिलते हैं॥

वर्णसङ्करजाति।

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः।
चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंचमः॥

इति मनुसंहिता।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये तीन वर्ण द्विजाति कहलाते हैं। चतुर्थ वर्ण एक जाति शूद्र है। इसके सिवाय पंचम वर्ण कोई नहीं है। इन्ही चारों वर्णोंके अनुलोम प्रतिलोम संसर्गसे संकरजाति उत्पन्न हुई है॥

व्यभिचारेण वर्णानामवेद्यावेदनेन च।
स्वकर्म्मणां च त्यागेन जायन्ते वर्णसङ्कराः॥

इति मनुसंहिता।

वर्णोंके नियम मर्यादा त्यागनेसे असवर्णा और सगोत्रादि हेतु अविवाह्य स्त्रीको विवाह करने तथा उपनयनादि कर्मके त्यागद्वारा वर्णसंकर जाति उत्पन्न हुई है ॥

वेनराजाके अधिकारमें संकरजातिकी प्रथम सृष्टि हुई है तथाहि ।

अयं द्विजैर्हि विद्वद्भिः पशुधर्म्मो विगर्हितः ।
मनुष्याणामपि प्रोक्तो वेने राज्यं प्रशासति ॥
स महीमखिलां भुञ्जन् राजर्षिप्रवरः पुरा ।
वर्णानां सङ्करं चक्रे कामोपहतचेतनः ॥

इति मनुसंहिता ।

जितने कालतक वेन राजाने राज्यशासन किया था उस समयभी पण्डित ब्राह्मणगण इसको पशुधर्म कहकर निन्दा करते थे और उसी समयतक यह पशुधर्म मनुष्योंमेंभी चला । पूर्वकालमें सम्पूर्ण पृथ्वीके अधीश्वर वेनने काममोहित होकर संस्करजातिकी सृष्टिका निर्माण किया था ॥

संकरजाति अनुलोमज और प्रतिलोमज दो भेदवाली हैं । उच्चवर्णके पुरुषद्वारा निकृष्ट वर्णकी स्त्रीसे संयोग करनेसे उत्पन्न सन्तान अनुलोमज संकर कहाती है और निकृष्टवर्ण पुरुषका उच्चजाति स्त्रीसे संयोग होनेसे उत्पन्न पुत्र प्रतिलोमज संकर होता है ॥

वर्णविवेकचन्द्रिकामें इस प्रकार लिखा है ।

चिन्तनाद्ब्रह्मदेवस्य चित्रगुप्तोऽभवत्पुरा ।
लेखनीमसिपात्रेण संयुतो लोकविश्रुतः ॥

ब्रह्माके विचार करनेसे चित्रगुप्तकी उत्पत्ति हुई है । जो कलम दवात ग्रहण किये लोकमें विख्यात हुआ ॥

तपस्यन्तं च ब्रह्माणं सत्यलोके पुरैकदा ।
प्रस्वेदश्च समुद्भूतो ललाटात्पतितः पदे ॥

तस्माज्जातः पुमानेकः श्यामः कमललोचनः ।
लेखनी च मसीपात्रं विभाति करकंजयोः ॥

इति वर्णविवेकचंद्रिका ।

एक समय सत्यलोकमें तप करते हुए ब्रह्माजीके ललाटसे पसीना चूकर ब्रह्माके चरणोंपर गिरा। उससे एक पुरुष श्यामवर्ण कमललोचन प्रगट हुआ जिसके हाथमें लेखनी और दवात थी। ब्रह्माजीसे उसने अपनी नाम जाति पूछी तब ब्रह्माजी बोले ॥

मम स्वेदात्समुद्भूतः कायस्थो जातितुर्यगः ।
चित्रगुप्तेति नाम्ना वै यमलोके व्रजाऽधुना ॥
मृतानां मानवानां वै लेखनीयं शुभाशुभम् ।
नाम्ना कीर्तिमती कन्या विश्वकर्मात्मजा शुभा ॥
सा ते पत्नी वरारोहा भविष्यति न संशयः ॥

इति वर्णविवेकचंद्रिका ।

मेरे स्वेदसे उत्पन्न होनेसे तुम कायस्थ नाम चतुर्थ वर्णमें होंगे। चित्रगुप्त तुम्हारा नाम होगा अब तुम यमलोकको जाओ मृतक हुए मनुष्योंका शुभ अशुभ लिखो। विश्वकर्माकी कीर्तिमती कन्या तुम्हारी स्त्री होगी। उसमें बारह पुत्र ब्राह्मणभक्त दानशील होंगे जो क्षत्रियोंके राजमें लेखक कर्म करनेवाले होंगे ॥

अथ तस्याऽभवन्पुत्रा द्वादशा लोकविश्रुताः ।
गौडश्च नागरश्चैव माथुरः शक्रसेनकः ॥
अहिठानश्च पांचालः श्रीवास्तव्यस्तथैव च ।
वाल्मीकिबाष्कलाम्बष्ठकरणाः सूरकेतवः ॥
पुरैकदा चित्रगुप्तः सोदिशत्तनयाँस्तथा ।

विप्राणां चरणे भक्तिः दानशीलास्तथैव च ॥
भवान्याः पूजनं पुत्रा नान्यदेवस्य पूजनम् ॥

तब उसमें लोकविख्यात बारह पुत्र जन्मे । गौड, नागर, माथुर, शक्रसेन, अहिठान, पांचाल, श्रीवास्तव्य, वाल्मीकि बाष्कल, अम्बष्ठ, करण, सूरध्वज ये बारह हुए । इन्ही बारहोंसे कायस्थोंके कुल चले हैं । इन पुत्रोंको चित्रगुप्तने आज्ञा दी है । हे पुत्रो ! हमारे वचन सुनो । ब्राह्मणोंके चरणोंमें भक्ति और भवानीका पूजन करना इसप्रकार इनके पुत्र पौत्र सब कायस्थ कहलाये और राजोंके यहां लेखनकार्य करने लगे ॥

कायस्थस्य च भार्यायां कर्मकारस्य वीर्यतः ।
सिन्धुरी नाम कायस्थः संकरेषु प्रकीर्तितः ॥
चन्द्रसेनस्य भार्यायां वेधितो जमदग्निना ।
दाल्भ्येन रक्षिता पूर्वं सुषुवे सा सुतं शुभम् ॥
सोऽपि कायस्थतनयां सिन्धुरस्याप्रवानिह ।
कायस्था चान्द्रसेनीया वर्णसंकरजातयः ॥
मृदंगपणवानां च वाद्यनिर्माणकारकाः ।
कायस्थानां त्रयो भेदा संप्रोक्ताः प्राणवल्लभे ॥
चित्रगुप्तात्मजाः सर्वे कायस्थाः शूद्रसंज्ञकाः ।
सैन्दुरीचान्द्रसेनीयौ कायस्थौ वर्णसंकरौ ॥
विश्वकर्मात्मजः कश्चित्कर्मकारेति संज्ञकः ।
तस्य कन्या विशालाक्षी मारिषा लोकविश्रुता ॥
गान्धर्वेण विवाहेन श्रीवस्तव्यः प्रजागृहे ।
तस्यां पुत्रोऽभवत्सुभ्रु लोकनाथेति संज्ञकः ॥

रजकस्य सुतापाणिं जगृहे सोऽपि दुर्मतिः।
तस्य वंशश्च खारेयः कायस्था लोकविश्रुताः॥

कायस्थकी भार्यामें कर्मकारके वीर्यसे सिन्दुरी कायस्थ संकर-जाति हुआ चन्द्रसेनकी भार्यामें जमदग्निसे वेधित हुआ और दाल्भ्य ऋषिसे रक्षित होनेसे उत्पन्न पुत्रने सिन्दुर कायस्थकी कन्यासे विवाह किया। इस कारण चंद्रसेनी कायस्थ संकरजाति-वाले हैं। मृदंग, पणव, बाजे बनानेका काम करते हैं। काय-स्थोंके तीन भेद हैं। चित्रगुप्तके पुत्र कायस्थ शूद्रसंज्ञक हैं। सि-न्दुरी और चान्द्रसेनी कायस्थ वर्णसंकर हैं। विश्वकर्माका पुत्र कोई कर्मकार था उसकी कन्या मारिषा थी श्रीवास्तव्यने उस-से गन्धर्वविवाह किया। उससे लोकनाथ पुत्र हुआ। उस दुर्म-तिने रजककन्याका पाणिग्रहण किया उसके वंशमें खारेयजाति उत्पन्न हुई॥

सर्ववर्णेषु तुल्यासु पत्नीष्वक्षतयोनिषु।
आनुलोम्येन सम्भूता जात्या ज्ञेयास्त एव ते॥

इति मनुसंहिता।

सम्पूर्ण वर्णोंमें विवाहिता सवर्ण अक्षतयोनि पत्नीके गर्भसे उत्पन्न पुत्र अपने पिताके वर्णके होते हैं और अनुलोम क्रमसे निकृष्ट जाति स्त्रीके गर्भजात पुत्र पिताके समान वर्ण न होकर सङ्करजाति होते हैं॥

स्त्रीष्वनन्तरजातासु द्विजैरुत्पादितान् सुतान्।
सदृशानेव तानाहुर्मातृदोषविगर्हितान्॥

इति मनुसंहिता।

द्विजोंद्वारा अव्यवहित दूसरे वर्णकी स्त्रियोंमें उत्पन्न किये पुत्र माताके हीन जातीयत्व दोषके कारण पिताके कुछ सदृश वर्ण

होते हैं अर्थात् माताकी अपेक्षा उत्कृष्ट और पिताकी अपेक्षा निकृष्ट वर्ण होते हैं । पिताके तुल्य वर्ण नहीं होते ॥

अपि च–समानवर्णासु पुत्राः सवर्णा भवन्ति ।
अनुलोमासु मातृवर्णाः ।
प्रतिलोमास्वार्य्यविगर्हिताः ।

इति विष्णुसंहिता ।

सवर्ण स्त्रीके गर्भजात पुत्र पितृवर्णके होते हैं, पिताकी अपेक्षा माता निकृष्टवर्ण हो तो वह सन्तान माताके वर्णकी होती है और पिता निकृष्टवर्ण माता उत्कृष्ट वर्ण हो तो सन्तान महात्माओंसे निन्दित होती है ॥

अशौचव्यवस्था ।

शुद्ध्येद्विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः ।
वैश्यः पंचदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति ॥

इति मनुसंहिता ।

ब्राह्मण दश दिनमें, क्षत्रिय बारह दिनमें, वैश्य पन्द्रह दिनमें, शूद्र एक महीनेमें, आशौचसे शुद्ध होता है ॥

एकाहाच्छुध्यते विप्रो योऽग्निवेदसमन्वितः ।
त्र्यहात् केवलवेदस्तु निर्गुणो दशभिर्दिनैः ॥

इति अत्रिसंहिता ।

अग्नि और वेदसे युक्त ब्राह्मण एकही दिनमें शुद्ध होता है । केवल वेद अध्यायी तीन दिनमें और जो ब्राह्मण गुणहीन है वह दश दिनमें शुद्ध होता है ॥

शौचाशौचं प्रकुर्वीरन् मातृवद्वर्णसंकराः ।

इति जातिमित्रम् ।

वर्णसङ्कर अपनी २ मातृकुलके नियमानुसार शौच और आशौचका व्यवहार करे ॥

वैद्य ।

ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायां अम्बष्ठो नाम जायते ।
निषादः शूद्रकन्यायां यः पारशव उच्यते ॥

ब्राह्मणसे वैश्यकन्यामें उत्पन्न पुत्र अम्बष्ठ नाम कहाता है और शूद्रकन्याके गर्भसे निषाद वा पारशव जाति उत्पन्न होती है। भगवान् पराशर कहते हैं ॥

वैश्यायां ब्राह्मणाज्जातोऽम्बष्ठो हि मुनिसत्तमः ।
ब्राह्मणानां चिकित्सार्थं निर्दिष्टो मुनिपुङ्गवैः ॥

कि वैश्याके गर्भसे ब्राह्मणद्वारा एक अम्बष्ठ मुनि उत्पन्न हुए। मुनिश्रेष्ठने उनको ब्राह्मणोंकी चिकित्साके निमित्त निर्दिष्ट किया, अमरसिंह कहते हैं कि।

अम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ।

ब्राह्मणसे वैश्यास्त्रीमें उत्पन्न वैद्यकवृत्तिवाला अम्बष्ठ कहलाता है। पुराणोंमें वैद्यकी उत्पत्ति इस प्रकार लिखी है कि।

वैद्योऽश्विनीकुमारेण जातश्च विप्रयोषिति ।
वैद्यवीर्येण शूद्रायां बभूवुर्बहवो जनाः ॥
ते च ग्रामगुणज्ञाश्च मन्त्रौषधिपरायणाः ।
तेभ्यश्च जाताः शूद्रायां ते व्यालग्राहिणो भुवि ॥

शौनक उवाच ।

कथं ब्राह्मणपत्न्यां तु सूर्य्यपुत्रोऽश्विनीसुतः ।
अहो केन विपाकेन वीर्य्याधानं चकार सः ॥

सौतिरुवाच ।

गच्छन्तीं तीर्थयात्रायां ब्राह्मणीं कुरुनन्दन ।
ददर्श कामुकीं कान्तः पुष्पोद्याने मनोहरे ॥

तया निवारितो यत्नात् बलेन बलवान् सुरः ।
अतीव सुन्दरीं दृष्ट्वा वीर्य्याधानं चकार सः ॥
द्रुतं तत्त्याज गर्भं सा पुष्पोद्याने मनोरमे ।
सद्यो बभूव पुत्रश्च तप्तकांचनसन्निभः ॥
सपुत्रा स्वामिनो गेहं जगाम व्रीडिता तदा ।
स्वामिनं कथयामास यस्माद्दैवादिसङ्कटम् ॥
विप्रो रोषेण तत्त्याज तं च पुत्रं स्वकामिनी ।
सरिद् बभूव योगेन सा च गोदावरी स्मृता ॥
पुत्रं चिकित्साशास्त्रं च पाठयामास यत्नतः ।
नानाशिल्पं च शस्त्रं च स्वयं स रविनन्दनः ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्ते ब्रह्मखण्डे १० मो अध्यायः ।

वैद्य अश्विनीकुमारसे ब्राह्मणकी स्त्रीमें एक बालक वैद्य उत्पन्न हुआ और उस वैद्यसे शूद्रा स्त्रीमें बहुतसे पुत्र उत्पन्न हुए । वे सब पुत्र ग्रामगुणके जाननेवाले मन्त्रौषधिपरायण हुए । इनके और इससे शूद्रके गर्भसे जो पुत्र हुए वे पृथ्वीमें व्यालग्राही अर्थात् सपेरे कहकर विख्यात हुए ॥

शौनक बोले ।

अहो सूर्यपुत्र अश्विनीकुमारने किस कारण किस कर्मदोषसे ब्राह्मणपत्नीमें वीर्य स्थापन किया यह आप कहिये ॥

सौति बोले ।

हे कुरुनन्दन ! एक समय तीर्थयात्राको जाती हुई किसी कामुकी मनोहर स्त्रीको मनरंजक पुष्पवाटिकामें देखा । उसके निवारण करनेपरभी अतीव सुन्दरी देखकर इन्होंने उसमें वीर्य स्थापन किया और तत्काल उस पुष्पोद्यानमें उसने गर्भको त्यागन किया उसी समय वह सुवर्णकी समान वर्णवाला पुत्र हुआ ।

वह लज्जित होकर पुत्र लिये स्वामीके घरको गई और इस दैवी संकटको स्वामीसे वर्णन किया । ब्राह्मणने क्रोध कर उस अपनी स्त्री और पुत्रको त्याग दिया । वह स्त्री योगमार्गमें स्थित हो गोदावरीनदी होकर बहने लगी और अश्विनीकुमारने स्वयं उस पुत्रको सम्पूर्ण चिकित्साशास्त्र पढाया और अनेक शिल्प और शस्त्रविद्याकी शिक्षा दी ॥

स्कन्दपुराणमें लिखा है । महर्षि गालव तीर्थयात्राको जाते थे । मार्गमें प्यासे होकर एक वैश्यकन्यासे जल मांगा उसने भक्तिसे पिला दिया, तब प्रसन्न हो इन्होंने उसे पुत्रलाभका आशीर्वाद दिया । उस समय इस कन्याका विवाह नहीं हुआ था अनूढाव-स्थामें पुत्रप्राप्ति सुनकर अप्रसन्न हो घर आय उसने ऋषिराजका वर कथन किया । उसके पिताने गालवसे कन्याग्रहणका अनुरोध किया । ऋषिने पानी पिलानेसे उसे मातास्थानमें जानकर उससे विवाह करना स्वीकार न किया और जो ऋषि वहां थे उन्होंने कहा गालवजीका वचन कभी मिथ्या न होगा । कन्याके पुत्र होगा परन्तु जिस प्रकार इसे दोष न लगे वह उपाय करना चाहिये । तब विचार कर उन्होंने एक मुट्ठी कुश लेकर उसका पुत्र कल्पित कर वेदमंत्रद्वारा उसको जीवन्यास करके सबने अपनी २ गोदीमें लेकर कन्याकी गोदीमें उसको दिया । कन्याकी गोदी स्पर्श करतेही वह दिव्यमूर्ति पुत्र हो गया और गालवके आशी-र्वादसे जीवसंचार हुआ । वही धन्वन्तरि कहाये । वेदमंत्रोंसे जी-वित होनेसे वैद्य कहाये और मातृकुलमें स्थापित हुए इस कारण उनका नाम अम्बष्ठ हुआ । यही वैद्यकुलके आदिगुरु हैं ॥

वैद्यराज धन्वन्तरिके सेन, गुप्त और दास तीन पुत्र हुए । उन-से वंगदेशमें वैद्यजाति विस्तृत हुई है ॥

कोई वैद्योंको वैश्यजाति कहते हैं परंतु यह प्रकृत वैश्यजाति नहीं है । ब्राह्मणके औरस वैश्यजातीय स्त्रीसे उत्पन्न होनेसे वैश्यकी

अपेक्षा श्रेष्ठ और ब्राह्मणकी अपेक्षा निकृष्ट है । द्विजातिसे सम्भूत होनेसे वेदशास्त्रका अधिकार है । अनेकोंके उपनयनादि होते हैं । यज्ञोपवीतधारी १५ दिन, अनुपनीत एक मास आशौच करे ॥

क्षत्रियाद् विप्रकन्यायां सूतो भवति जातितः ।
वैश्यान्मागधवैदेहौ राजविप्राङ्गनासुतौ ॥

इति मनुसंहिता ।

क्षत्रियसे ब्राह्मणकी कन्यामें सूतजाति उत्पन्न होती है । वैश्यसे क्षत्रियाके गर्भमें मागधजाति उत्पन्न होती है और वैश्यसे ब्राह्मणीके गर्भमें वैदेहजाति उत्पन्न होती है ये स्तुतिपाठ करते हैं ॥

माहिष्य ।

क्षत्रियाद् वैश्यकन्यायां माहिष्यस्य च सम्भवः ।

इति परशुरामसंहिता ।

क्षत्रियसे वैश्यकन्यामें माहिष्यजाति उत्पन्न होती है और स्वरशास्त्र, हस्तरेखा देखना इसकी जीविका है ॥

अपि च—माहिष्योऽर्य्या क्षत्रिययोः ।

इत्यमरः ।

क्षत्रियके वीर्यसे वैश्यस्त्रीमें उत्पन्न माहिष्य जाति होती है । 'शूद्राविशोस्तु करणो' इत्यमरः ब्रह्मवैवर्तपुराणे च । शूद्रास्त्रीमें वैश्यसे उत्पन्न लेखनवृत्तिवाला करण कायस्थ विशेष कहाता है ॥

क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां क्रूराचारविहारवान् ।
क्षत्रशूद्रवपुर्जन्तुरुग्रो नाम प्रजायते ॥

इति मनुसंहिता ।

क्षत्रियके औरससे शूद्र कन्याके गर्भमें क्रूर आचार और विहारवाला क्षत्रवंदेह और शूद्रवत् हृदयविशिष्ट उग्रजाति उत्पन्न होती है । इसकी शस्त्रवृत्ति है ॥

निषादः शूद्रकन्यायां यः पारशव उच्यते ।

इति मनुसंहिता ।

ब्राह्मणके औरससे शूद्रकन्यामें निषाद वा पारशव जातिकी उत्पत्ति होती है ॥

शूद्रादायोगवः क्षत्ता चण्डालश्चाधमो नृणाम् ।
वैश्यराजन्यविप्रासु जायन्ते वर्णसङ्कराः ॥

इति मनुसंहिता ।

शूद्रके वीर्यसे वैश्याके गर्भमें आयोगव, क्षत्रियाके गर्भमें क्षत्ता और ब्राह्मणीमें शूद्रके वीर्यसे मनुष्योंमें अधम चाण्डाल जाति उत्पन्न होती है । मृतकवस्त्र निन्द्य मांस इनकी आजीविका है ॥

गोपो माली तथा तेली तन्त्री मोदकवारुजी ।
कुलालः कर्मकारश्च नापितो नव शायकाः ॥

इति पराशरसंहिता ।

सद्गोप, मालाकार (माली), तेली, तंत्री, मोदक (मयरा), वारुजी, कुह्मार, कर्मकार, नाई इन नौ जातिको नवशायक कहते हैं । ये सब जाति नीचे विवरणके लिखे अनुसार अपना अपना कार्य करते हैं ॥

तेली ।

वारुजेर्गोपकन्यायां तैलिकः समजायत ।

वारुज (वारी) से गोपकन्यामें तेलीजाति उत्पन्न हुई है । तेलियोंके दो भेद हैं एक तो तेल निकालकर बेचते हैं और तिली-तिलादि नाजको विक्रय करते तथा दूसरे व्यवसायद्वारा अपनी जीविका निर्वाह करते हैं ॥

मालाकार ।

तैलिक्यां कर्मकाराच्च मालाकारस्य सम्भवः ।

इति परशुरामसंहिता ।

कर्मकारके औरससे तेली जातिकी स्त्रीके गर्भमें मालाकार (माली) की उत्पत्ति हुई है । इनका काम पुष्पचयन (माला रचना) और सोना तथा अभ्रककी वस्तु निर्माण करना है ॥

तांबूलिक ।

वैश्यात्तु शूद्रकन्यायां जातस्ताम्बूलिकस्तथा ।

इति बृहद्धर्मपुराणम् ।

वैश्यसे शूद्रकन्यामें ताम्बूलिक जाति उत्पन्न हुई । तांबूलिके (तंबोली) पहले तम्बूलका व्यवहार करते थे इस समय वे दूसरा व्यवसायभी करते हैं ॥

' गोपो माली ' इत्यादि वचनसे गोपशब्दसे सद्गोप जाति जाननी । सद्गोपजातिही सच्छूद्र कहलाती है इसकी उत्पत्ति इस प्रकार लिखी है ।

क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां समुत्पन्नस्तु यः सुतः ।
स गोपाल इति ज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न संशयः ॥

इति पराशरसंहितायां ११ अध्यायः ।

क्षत्रियके औरससे शूद्रकन्यामें जो पुत्र उत्पन्न हुआ उसको गोपाल वा सद्गोप कहते हैं । ब्राह्मण इसका भोजन स्वीकार करते हैं ॥

सद्गोपगण कृषिव्यवसायद्वारा जीविका निर्वाह करते थे । बहुत कालतक ये सत्शूद्र कहलाये और शूद्रोंका कर्त्तव्य जो विधि है उसके अनुसार वे चलते थे परंतु इनकी वृत्ति अब कितने दिनोंसे लुप्त हो गई सो परिज्ञात नहीं । अब वे यथार्थ रूपमें नहीं हैं ॥

वारुजी तन्त्रवाय्यां वै गोपात् सद्योऽप्यजायत ।

गोपजातिके पुरुषसे जुलाहीकी स्त्रीके गर्भमें वारुजजाति उत्पन्न हुई है । इन्हे वारीभी कहते हैं येभी ताम्बूलादि बेचते हैं ॥

कर्मकार ।

गोपालात्तन्त्रवाय्यां वै कर्मकारोऽप्यभूत् सुतः ।

इति पराशरपद्धतिः ।

गोपालसे तन्त्रवायकी स्त्रीमें कर्मकार जाति उत्पन्न हुई है। लोहकर्म इनकी वृत्ति है यही लुहार कहाते हैं ॥

कुम्भकार ।

मालाकारात् कर्म्मकार्यां कुम्भकारो व्यजायत ।

इति पराशरसंहिता ।

मालीसे लुहारनके गर्भमें कुम्हारकी जाति उत्पन्न हुई है । ये मृत्तिकाके पात्र बनाते हैं ॥

अपि च–पट्टिकाराच्च तैलिक्यां कुम्भकारो बभूव ह ।

इति पराशरपद्धतिः ।

तथा पट्टिकारके औरससे तेलनके गर्भमें कुह्मारकी उत्पत्ति हुई है। इनकी वृत्ति मृत्पात्र और खिलोने बनाना है । कदाचित् ये कुंजगर कहते हैं ॥

नापित ।

शूद्रकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः ।
संस्कृतस्तु भवेद्दासो ह्यसंस्कारैस्तु नापितः ॥

इति पराशरसंहितायां ११ अध्यायः ।

शूद्रकन्याके गर्भसे ब्राह्मणके औरससे उत्पन्न ब्राह्मणद्वारा संस्कारको प्राप्त होकर दास और संस्कारहीनको नापित कहते हैं ॥

अपि च–क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां जातौ नापितमोदकौ ।

इति बृहद्धर्म्मपुराणम् ।

क्षत्रियके औरससे शूद्रकन्यामें नापित और मोदक जाती उत्पन्न हुई है और विवादार्णवसेतुमें लिखा है कि ।

शूद्रायां क्षत्रियाज्जातः—

इति विवादार्णवसेतुः शब्दकल्पद्रुमश्च ।

क्षत्रियके औरससे शूद्रास्त्रीमें नापितकी उत्पत्ति हुई है। नाईकी वृत्ति क्षौरकर्म, विवाहादि मंगलकार्य तथा देवपितृकर्ममें परिचर्या करना है ॥

गन्धवणिक् ।

जातो वणिक् गन्धिको हि ब्राह्मणाच्छूद्रयोषिति ।

ब्राह्मणके औरससे शूद्रामें गन्धवणिक्की उत्पत्ति हुई है। गन्धवणिक् एक प्रकृत व्यवसायी जाति है। प्रथम यही सौदागर कहाये। ये गन्धद्रव्य इतर फुलेलादि तथा अन्यान्य बहुमूल्य द्रव्य बेचते हैं ॥

कांस्यकारः ।

ब्राह्मणाच्छूद्रकन्यायां कांस्यकारो बभूव ह ।

ब्राह्मणके वीर्यसे शूद्रकन्याके गर्भमें कांस्यकार अर्थात् कांसी बनानेवाले कसेरेकी उत्पत्ति हुई है। ये तांबा पीतल कांसीकी वस्तु बनाकर बेचते हैं ॥

शंखकार ।

विप्रवीर्य्येण शूद्रायां शंखकारस्य सम्भवः ।

ब्राह्मणके वीर्यसे शूद्रास्त्रीमें शंखकारकी उत्पत्ति हुई है। शंखका व्यवसाय इसकी वृत्ति है ॥

तन्त्रवाय ।

मणिबन्धान्मणिकार्य्यां तन्तुवायाश्च जज्ञिरे ।

इति पराशरपद्धतिः ।

मणिबन्धके औरससे मणिकारजातिकी स्त्रीके गर्भमें तन्तुवाय जुलाहे उत्पन्न हुए। वस्त्र बुनना इनकी वृत्ति है ॥

मोदक।

क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां जातौ नापितमोदकौ।

इति बृहद्धर्मपुराणम्।

क्षत्रियसे शूद्रकन्यामें नाई और मोदक जाति उत्पन्न हुई है॥

अपि च—स च शूद्रायां क्षत्रियाज्जातः।

इति स्मृतिः शब्दकल्पद्रुमश्च।

शब्दकल्पद्रुममें लिखा है कि क्षत्रियके वीर्यसे शूद्रामें मोदक (भयरा) जाति उत्पन्न हुई है इनकी वृत्ति मिष्टान्न बनाकर बेचना है॥

चैतन्यचरितामृतमें लिखा है कि जिस समय चैतन्यदेवने संन्यास ग्रहण किया, उस समय मधुनामक एक नाईने उनका शिर मुंडन कर अपनेको कृतार्थ माना और क्षौरकर्म न करनेकी इच्छा प्रकाश की। तब चैतन्यदेवने प्रसन्न हो उसे मोदक निर्माण करनेकी वृत्ति दी और वह यही कर्म करने लगा। उसके वंशके पुरुषभी यही कृत्य करने लगे, तब यह मोदककी एक पृथक् जाति प्रगट हुई॥

विश्वकर्मा च शूद्रायां वीर्य्याधानं चकार सः।
ततो बभूवुः पुत्राश्च नवैते शिल्पकारिणः॥
मालाकारः कर्म्मकारः शंखकारः कुविंदकः।
कुम्भकारः कंसकारः षडेते शिल्पिनां वराः॥
सूत्रधारश्चित्रकारः स्वर्णकारस्तथैव च।
पतितास्ते ब्रह्मशापादयाज्या वर्णसंकराः॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम्।

विश्वकर्माने शूद्रजातिकी स्त्रीमें वीर्य धारण किया उससे शिल्पकार नौ पुत्र हुए। माली, कर्मकार (लुहार), शंखकार, कुविंदक (जुलाहा), कुम्हार, कसेरे ये छः कारीगरीमें मुख्य हैं। सूत्रधार, चित्रकार (चित्र खैंचनेवाले), स्वर्णकार ये तीन ब्रह्मशापसे पतित हो गये। अयाज्य और वर्णसंकरजाति है॥

नवशायक गणभी सत्शूद्र कहे जाते हैं। इनके आचार विचार और इतर जाति ये शूद्रोंकी अपेक्षा विशुद्ध हैं। राढीय ब्राह्मण तथा गौडजातीय ब्राह्मणगण इनका पौरोहित्य करते हैं। कहते हैं कि जब परशुरामजीने क्षत्रियकुलध्वंस किया था तब ये नौ जाति भार्गवकी अनुचर थीं इस कारण प्रसन्न हो भार्गवने उनको सच्छूद्रश्रेणीमें सन्निवेशित किया है। इन नौ जातिने शायक (बाण) रूप होकर सहायता की इससे नवशायक कहाते हैं॥

कैवर्त्त।

निषादो मार्गवं सूते दासं नौकर्मजीविनम्।
कैवर्त्तमिति यं प्राहुरार्य्यावर्त्तनिवासिनः॥

इति मनुसंहिता।

निषादके औरससे आयोगव जातिकी स्त्रीके गर्भमें नौकर्मजीवी मार्गवदास जाति जन्मी। आर्य्यावर्तवासी इसको कैवर्त (मल्लाह) कहते हैं॥

अपरं च–क्षत्रवीर्येण वैश्यायां कैवर्त्तः परिकीर्त्तितः।
कलौ धीवरसंसर्गाद्धीवरः कथितो भुवि॥

इति पाद्मे ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे च।

अथवा क्षत्रीके वीर्यसे वैश्यामें कैवर्तकी उत्पत्ति हुई है और कलियुगमें धीवरजातिके संसर्गसे मत्स्यधारणद्वारा जीविका निर्वाह करनेसे पतित होकर धीवरनामसे विख्यात हुआ॥

स्वर्णकाराच्च कैवर्त्तः कुवेरिण्यां बभूव ह।

इति परशुरामसंहिता।

स्वर्णकारके औरससे कुवेरिणीके गर्भमें कैवर्त जाति उत्पन्न हुई है। ऊपर लिखे अनुसार कैवर्तजाति तीन प्रकारसे उत्पन्न हुई है। मनु और परशुरामसंहिताके अनुसार कैवर्तगण नीच जाती है स्मृतिशास्त्रमें कथित है॥

रजकश्चर्म्मकारश्च नटो बुरुड एव च ।
कैवर्त्तो मेदभिल्लाश्च षडेते अन्त्यजाः स्मृताः ॥

धोबी, चमार, नट, बुरुड, कैवर्त, मेद, भील ये छः अन्त्यज जाति हैं । इसमें कैवर्तभी अस्पर्शजातिके अन्तर्गत आया है । विदित होता है यह कैवर्त मनु और परशुरामसंहितालिखित है । पद्मपुराण और ब्रह्मवैवर्तपुराणमें यह कैवर्तजाति उच्चवर्णसम्भूत कही है इस कारण यह अन्त्यज नहीं है, इनका व्यवसाय दो प्रकारका है ॥

कैवर्त्ता द्विविधाः प्रोक्ता हालिका जालिका मुने ।
हलवाहा हालिकाश्च जालिका मत्स्यजीविनः ॥

इति बृहद्व्याससंहिता ।

हे मुने! कैवर्त दो प्रकारके होते हैं, हालिक और जालिक । जो हलद्वारा खेती कर जीविका निर्वाह करें वे हालिक और जालसे मच्छी पकडनेवाले जालिक कहाते हैं । हुगली, हावडा, मेदिनीपुरके अन्तर्गत अधिक तथा पश्चिमोत्तरमें न्यून हालिक कैवर्त हैं और धीमरोंसे तौ पश्चिमोत्तर भरा पडा है । इस देशमें धीमरको सत्शूद्रही माना है । द्विजातिगण इनके हाथका जल ग्रहण करते हैं । जो ब्राह्मण इनका पौरोहित्य ग्रहण करते हैं उन्हे व्यासोक्त कहते हैं । इस देशमें गौडभी पौरोहित्य कर्म करते हैं ॥

नवद्वीपादि स्थानमें धीमरका जल नहीं ग्रहण करते, वह नीच मानते हैं । महाराज बल्लालसेन इनके जल ग्रहणकी प्रथा वहां कर गये हैं ॥

एक समय महाराज बल्लालसेनने अपने पुत्रके असत्आचारसे उसको निर्वासित कर दिया । लक्ष्मणसेनने कुछ अनुचरोंको साथ लेकर नौकारोहणपूर्वक जलमार्गसे यात्रा की । उनकी स्त्री स्वामीके वियोगमें बहुत कातर हुई । उसने विचारा कि विना राजाके प्रसादके

किसी प्रकार पतिकी प्राप्ति न होगी । यह विचारकर उसने राजाके भोजनस्थानके सन्मुख भीतिपर खेदसूचक एक श्लोक लिख दिया कि भोजनको बैठतेही सन्मुख दीखे ॥

पतत्यविरतं वारि नृत्यन्ति शिखिनो मुदा ।
अद्य कान्तः कृतान्तो वा दुःखस्यान्तं करिष्यति ॥

जल निरन्तर वर्षता है, मोर आनन्दसे नाचते हैं, आज स्वामी यह कृतान्त कान्ताके दुःखका अन्त अवश्य होगा ॥

यह वचन सुनतेही महाराजने कामिनीके मनका दुःख जान लिया और बाहर आनकर तत्काल कुमारके लानेके निमित्त कैवर्तोंको आज्ञा दी कि जो शीघ्र लावेगा उसको पुरस्कार देंगे । राजाकी आज्ञासे वे नौकापर आरोहण करके अनुसरण करने गये और शीघ्रही राजाके निकट ले आये । राजाने उनकी प्रार्थना सार उनका अस्पर्श दोष दूर करके उनके हाथका जल ग्रहण करनेकी आज्ञा प्रचार की ॥

जो कुछभी हो इस समय इनके हाथका जल पश्चिमोत्तरमेंभी ग्राह्य है । कैवर्तोंके आचार व्यवहार किसी २ देशमें कुछ अच्छेभी हैं । इनमें अनेक विश्वासी, स्वामिभक्तिपरायण, कार्यकुशल, सेवासम्पन्न और संतुष्टचित्त होते हैं ॥

ब्राह्मणादुग्रकन्यायामावृत्तो नाम जायते ।
आभीरोऽम्बष्ठकन्यायामायोगव्यान्तु धिग्वणः ॥

इति मनुसंहिता ।

ब्राह्मणसे उग्र कन्यामें आवृत्त, अम्बष्ठकन्यामें आभीर और आयोगवीमें धिग्वण उत्पन्न हुआ ॥

वैश्य एव आभीरो गवाद्युपजीवी ।

इति प्रकृतिवादः ।

गवादिके उपजीवी आभीरजाति वैश्य कहाते हैं । यह साधा-

रण बात है। इन उत्तरपश्चिमदेशोंमें आभीरगोप बहुत हैं इनको अहीर गोपाल कहते हैं। ये गाय भैंसका दूध, दही, घी, मक्खन आदि बेंचते हैं, इनके हाथका जल दूषित नहीं है॥

गोपजाति।

मणिबन्ध्यां तन्तुवायात् गोपजातेश्च सम्भवः।

इति पराशरपद्धतिः।

मणिबन्धीमें तन्तुवायसे गोपजाति उत्पन्न हुई है। इस वचनमें जो यह गोपजातिकी कथा कही गई है और जो आभीरसे इतर गोपजातिका कथन किया है ग्वाला बल्लवगोप आदि इस जातिके अन्तर्गत हैं। ढाकेके ग्वाल अधिक बली होते हैं। एक समय यह गौडराजके दुर्गरक्षक थे। अनेक इनमें द्वारपालकका कार्य करते थे इस कारण इनको उधर गौड ग्वालभी कहते हैं॥

बल्लवगोप दूध, दही आदिके बेचनेका व्यवसाय करते हैं, इस कारण इनका जल चलित नहीं है। नवद्वीपमें इनके हाथका जल सब ग्रहण करते हैं॥

भींगाग्वाला यह वृषोत्सर्गादिमें वृषको दागते हैं। गोपजातिमें यह निकृष्ट गिने जाते हैं। इनका जल स्पर्शके योग्य नहीं है॥

स्वर्णवणिक्।

वैश्यायां करणाज्जातौ तक्षा रजक एव च।
स्वर्णकारः स्वर्णवणिक् तस्यामम्बष्ठसम्भवौ॥

इति बृहद्धर्म्मपुराणम्।

वैश्यजातिकी स्त्रीके गर्भसे करणके औरससे तक्षा, रजक (धोबी) और अम्बष्ठके औरससे स्वर्णकार और स्वर्णवणिक्की उत्पत्ति हुई है॥

कश्चिद् वणिक्विशेषश्च संसर्गात् स्वर्णकारिणः।
स्वर्णचौर्य्यादिदोषेण पतितो ब्रह्मशापतः॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम्।

कोई विशेष वणिक् स्वर्णकारके संसर्गसे स्वर्णकी चोरी आदिके दोषसे ब्रह्मशापसे पतित हुआ है ॥

स्वर्णवणिक् विशेष कर सुवर्णका व्यापार करते हैं इस प्रकारका जो कार्य करते हैं वे लोकमें पोद्दार कहाते हैं । इनमें अनेक महाजनी और उच्च व्यवसाय करते हैं । इनका आचार विचार निंदनीय नहीं है । इनमें अनेक वैष्णवधर्मावलम्बी होते हैं तथा शुद्ध आचरण रखते हैं । गलेमें काष्ठमाला और तिलक लगाते हैं ॥

कहते हैं राजा बल्लालसेननेभी इनको अस्पर्श कर दिया था । उन्होंने स्वर्णगौ एक समय दान की थी । ब्राह्मणोंने इनको जाकर दी इन्होंने उनपर टांकी लगाकर सोना परखा और भीतरसे रुधिररूप लाक्षारस वहने लगा उसीसे ब्राह्मण संभ्रान्त हुए और उन्होंने राजासे कहा इसपर राजाने उनको अस्पर्श कर दिया ॥

जो कुछभी हो स्वर्णवणिकोंमें अनेक धनाढ्य क्रियावान् और विख्यात कीर्तिवाले हैं । कुछ विद्याचर्चामें तथा भजनमें मन लगाते हैं । इनमें दरिद्री बहुतही न्यून होते हैं ॥

रथकारः ।

रथकारस्तु माहिष्यात् करण्यां यस्य संभवः ।

इति वर्णविवेकचंद्रिका ।

शूद्र और वैश्यकी कन्यामें वैश्य और क्षत्रियके पुत्रसे उत्पन्न रथकार कहलाता है । इसकी जीविका रथ निर्माण पहिये आदि बनाना है । गाडीके पहिये यही जाति बनाती है ॥

तक्षा च तन्तुवायश्च नापितो रजकस्तथा ।
पंचमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः ॥

बढई, जुलाहा, नाई, धोबी, चमार येभी पांचों शिल्पी कहाते हैं । इन जातियोंके समूहको श्रेणी कहते हैं । श्रेणी, कुलक, कुलकोष्ठी ये शिल्पियोंके कुलके प्रधान नाम हैं ॥

शंकुकारात्मजाः सर्वे बभूवुश्चित्रकारिणः ।
कुविन्दकात्मजौ जातौ कैरी कुर्मीति संज्ञकौ ॥

शंकुकारके पुत्र चित्रकार हुए; कुविन्दके पुत्र कैरी कुर्मी हुए । ये क्षेत्रकर्ममें चतुर, ब्राह्मणभक्तिमें तत्पर हुए । इनके पुत्र पौत्र शूद्र-वर्णमें प्रतिष्ठित हुए ॥

स्वर्णकारः ।

स तु शूद्रायां विश्वकर्म्मणो जातः ।

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणं शब्दकल्पद्रुमश्च ।

विश्वकर्माके औरससे शूद्राके गर्भमें स्वर्णकार उत्पन्न हुआ है (मालाकारका उत्पत्तिप्रकरण ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त देखो) ॥

वैश्यायामम्बष्ठाज्जातः ।

इति बृहद्धर्म्मपुराणम् ।

अम्बष्ठसे वैश्या स्त्रीके गर्भमें स्वर्णकारकी उत्पत्ति हुई है (स्वर्ण-वणिक्का उत्पत्तिप्रकरण देखो) ॥

स्वर्णकारः स्वर्णचौर्यात् ब्राह्मणानां द्विजोत्तम ।
बभूव सद्यः पतितो ब्रह्मशापेन कर्म्मणा ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

हे द्विजोत्तम ! यह स्वर्णकार ब्राह्मणोंके सुवर्णकी चोरी करनेसे ब्राह्मणोंके शापसे पतित हो गया । इनकी वृत्ति सुवर्णके गहने निर्माण करनेकी है ॥

सूत्रधार ।

स तु शूद्रायां विश्वकर्म्मौरसजातः ।

इति शब्दकल्पद्रुमः ।

विश्वकर्माके औरससे शूद्रा स्त्रीके गर्भमें सूत्रधारकी उत्पत्ति हुई है । (ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त विवरण देखो मालाकारके प्रकरणमें) ॥

वैश्यायां करणाज्जातौ तक्षा रजक एव च ।

इति बृहद्धर्म्मपुराणम् ।

वैश्यास्त्रीमें करणजाति पुरुषसे तक्षा और रजककी उत्पत्ति हुई है । यह तक्षा बढई कहलाते हैं ॥

सूत्रधारो द्विजातीनां शापेन पतितो भुवि ।
शीघ्रञ्च यज्ञकाष्ठञ्च न ददौ तेन हेतुना ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

सूत्रधार ब्राह्मणोंके शापसे पृथ्वीमें पतित हुआ। ब्राह्मणोंने कहा शीघ्र यज्ञकाष्ठ दो उसने न दिया इस कारण ब्राह्मणोंने शाप दिया कि तू पतित हो जा। काष्ठके द्रव्य और प्रतिमा निर्माण इनकी वृत्ति है॥

चित्रकार ।

स तु शूद्रागर्भे विश्वकर्म्मौरसजातः ।

इति शब्दकल्पद्रुमः ।

विश्वकर्माके औरससे शूद्राके गर्भमें चित्रकारजाति उत्पन्न हुई है । (मालाकारका उत्पत्तिप्रकरण ब्रह्मवैवर्तपुराणमें देखो) ॥

व्यतिक्रमेण चित्राणां सद्यश्चित्रकरस्तथा ।
पतितो ब्रह्मशापेन ब्राह्मणानां च कोपतः ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

यह चित्रकार चित्रोंके विपरीत भाव करनेसे ब्राह्मणोंके कोपसे और शापसे पतित हुआ । पटपर चित्रादि लेखन इसकी वृत्ति है ॥

राजपुत्र ।

क्षत्रात् करणकन्यायां राजपुत्रो बभूव ह ।

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

क्षत्रियसे करणकी कन्यामें राजपुत्रजाति उत्पन्न हुई है । इनका व्यवसाय शास्त्रलिखित नहीं है ॥

तैलकार ।

कुम्भकारस्य वीर्येण सद्यः कोटकयोषिति ।
बभूव तैलकारश्च कुटिलः पतितो भुवि ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

कुंभकारके वीर्यसे कोटक (घर बनानेवाले राज) स्त्रीके गर्भसे कुटिल तेलकार जाति उत्पन्न हुई । यह जन्मसेही पतित हुई । यह अस्पर्शजाति है, इनका जल ग्रहण नहीं करते ॥

तीवर ।

सद्यः क्षत्रियवीर्येण राजपुत्रस्य योषिति ।
बभूव तीवरश्चैव पतितो जारदोषतः ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

क्षत्रियके वीर्य और राजपुत्र स्त्रीके गर्भमें तीवर उत्पन्न हुआ यह जारदोषसे पतित हुआ । इसकी वृत्ति मछली पकडना और नौका चलाना है ॥

कपाली ।

स तु ब्राह्मण्यां तीवराज्जातः ।

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

तीवरके औरससे ब्राह्मणीके गर्भमें श्रीकपाली जाति उत्पन्न हुई है ॥

वागतीत ।

क्षत्रवीर्य्येण वैश्यायामृतोः प्रथमवासरे ।
जातः पुत्रो महादस्युर्बलवांश्च धनुर्द्धरः ॥

चकार वागतीतं च क्षत्रियो वारितस्तया ।
तेन जात्या स पुत्रश्च वागतीतः प्रकीर्तितः ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

क्षत्रियके वीर्यसे वैश्याके गर्भमें ऋतुके प्रथम दिन संगम करनेसे बलवान् धनुषधारी महादस्यु एक पुत्र उत्पन्न हुआ । वैश्यकन्याके निवारण करनेपरभी क्षत्रियसे वागातीत कार्य किया, इस कारण यह पुत्र वागातीत नामवाला हुआ । मच्छी पकडना तथा द्वारपालक इसकी वृत्ति है ॥

दोलवाही ।

वैश्यायाञ्च तैलकाराद्दोलवाही बभूव ह ।

इति बृहद्धर्म्मपुराणम् ।

तैलकारके औरससे वैश्यामें दोलवाही अर्थात् पालकी उठानेवाली जाति उत्पन्न हुई । पालकी आदि उठाना इनका कार्य है ॥

पौण्ड्रक ।

शुण्डीयोषिति वैश्यात्तु पौण्ड्रकश्च प्रकीर्तितः ।

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

वैश्याके औरससे शुण्डी जातिकी स्त्रीगर्भमें पौण्ड्रक अर्थात् पोदजाति उत्पन्न हुई है । ये मत्स्यविक्रय और कृषिकार्य करते हैं ॥

रजक ।

तीवर्य्यां धीवरात् पुत्रो बभूव रजकः स्मृतः ।

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

धीवरके औरससे तीवरकी स्त्रीमें रजक धोबी जाति उत्पन्न हुई है । कपडे धोना इसकी वृत्ति है ॥

वैश्यायां करणाज्जातो तक्षा रजक एव च ।

इति बृहद्धर्म्मपुराणम् ।

कर्णके औरससे वैश्यके गर्भमें सूत्रधर बढई और धोबी उत्पन्न हुआ है। यह अन्त्यज जाति है । वस्त्रोंका परिष्कारही इसका कर्म है ॥

कृषिरजक ।

सद्गोपात् पतितो यस्तु संसर्गाद्रजकस्त्रियः ।
कृषिरजकनाम्नैव अथासौ परिकीर्तितः ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

सद्गोप जातिका रजकजातिकी स्त्रीसे संसर्ग होकर जो जाति उत्पन्न हुई है वह पतित और कृषिरजक कहाती है ॥

कुदर ।

ब्राह्मण्यामृषिर्वीर्य्येण ऋतोः प्रथमवासरे ।
कुत्सिते चोदरे जातः कूदरस्तेन कीर्तितः ॥
तदशौचं विप्रतुल्यं पतितो ऋतुदोषतः ।
सद्यः कोटकसंसर्गादधमो जगतीतले ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

ऋषिके वीर्यसे ऋतुके प्रथम दिन ब्राह्मणीके गर्भसे कुत्सित उदरसे उत्पन्न होनेके कारण कुदर जाति हुई । ब्राह्मणोंकी समान इनका अशौच दश दिन लगता है । यह ऋतुदोषसे पतित और कोटक (गृहकर्ता) के संसर्गसे भूमिमें अधम जाति हुई । वांसके पात्र निर्माण और बाजे बनाने इनकी वृत्ति है ॥

वेण ।

वैदेहकेन त्वम्बष्ठ्यामुत्पन्नो वेण उच्यते ।

इति मनुसंहिता ।

वैदेहकसे अम्बष्ठजातिकी स्त्रीके गर्भमें उत्पन्न पुत्र वेन जाति हुआ । बाजा बजाना इसकी वृत्ति हुई ॥

श्वपाक ।

क्षत्तुर्जातस्तथोग्रायां श्वपाक इति कीर्त्यते ।

इति मनुसंहिता ।

क्षत्रिय जातिके औरससे उग्रजाति स्त्रीके गर्भमें उत्पन्न पुत्र श्वपाक कहाता है यह चाण्डाल है ॥

पुक्कस ।

जातो निषादाच्छूद्रायां जात्या भवति पुक्कसः ।
शूद्राज्जातो निषाद्यां तु स वै कुक्कुटकः स्मृतः ॥

इति मनुसंहिता ।

निषादसे शूद्रामें उत्पन्न हुई जाति पुक्कस है और शूद्रसे निषादीमें उत्पन्न हुई जाति कुक्कुर कहाती है । बिलवासी जन्तुओंका वध करना इनकी वृत्ति है ॥

सद्यश्चाण्डालकन्यायां लेटवीर्य्येण शौनक ।
बभूवतुस्तौ द्वौ पुत्रौ दुष्टौ हड्डिडोमौ तथा ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

हे शौनक ! लेटके वीर्यसे चाण्डाल कन्याके गर्भसे हड्डी और डोम ये दो दुष्ट पुत्र उत्पन्न हुए । कहीं यह पाठ 'हड्डिकशौण्डिकौ' इस प्रकारभी है परंतु शौण्डिककी उत्पत्ति अगले श्लोकमें लिखी है इससे यही पाठ संगत है ॥

शौण्डिक ।

वैश्यात्तीवरकन्यायां सद्यः शुण्डी बभूव ह ।

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

वैश्यके औरससे तीवरकन्यामें शौण्डिक वा शुण्डी जाति उत्पन्न हुई है । ये मद्य बेंचते हैं तथा सुरादि मादक द्रव्यको प्रस्तुत करते हैं, यह अन्त्यज जाति है ॥

चाण्डाल ।

ब्राह्मण्यां शूद्रवीर्येण पतितो जारदोषतः ।
सद्यो बभूव चाण्डालः सर्वस्मादधमोऽशुचिः ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

ब्राह्मणीमें शूद्रके वीर्यसे चाण्डाल उत्पन्न हुआ है यह जारदोषसे सब धर्मोंसे पतित और अशुचि है ॥

चाण्डालः श्वपचः क्षत्ता सूतो वैदेहकस्तथा ।
मागधायोगवौ चैव सप्तैतेऽन्त्यावसायिनः ॥

इति मनुसंहिता ।

चाण्डाल, श्वपच, क्षत्ता, सूत, वैदेहिक, मागध और अयोगव ये सात जाति अन्त्यावसायी कहाती है ॥

अपि च–चण्डालश्वपचानान्तु बहिर्ग्रामात् प्रतिश्रयः ।
अपपात्राश्च कर्त्तव्या धनं येषां श्वगर्दभम् ॥
अबान्धवं शवं चैव निर्हरेयुरिति स्थितिः ।
वध्यांश्च हन्युः सततं यथाशास्त्रं नृपाज्ञया ॥
वध्यवासांसि गृह्णीयुः शय्याश्चाभरणानि च ॥

इति मनुसंहिता ।

चाण्डाल और श्वपच (कंजर) इनको ग्रामके बाहर बसावे, भोजनके निमित्त इनको पात्र देना उचित नहीं । कुत्ते और गधे इनका धन है, यह बन्धुबांधवहीन मृतकोंको उठावे और शास्त्रानुसार राजाज्ञासे वध्योंका वध करें । मृतकोंके वस्त्र शय्या और अलंकार लेवें ॥

चर्मकार ।

तीवरेणैव चाण्डाल्यां चर्मकारो बभूव ह ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

तीवरके वीर्यसे चाण्डालीमें चर्मकारकी उत्पत्ति हुई है ॥

कारावारो निषादात्तु चर्म्मकारः प्रसूयते ।

इति मनुसंहिता ।

अथवा निषादके औरससे वैदेहक स्त्रीके गर्भ कारावार अर्थात् शिल्पियोंमें अधम चर्मकार जाति उत्पन्न है ॥

मांसच्छेदी कसाई ।

चर्म्मकार्य्यां च चाण्डालात् मांसच्छेदी बभूव ह ।

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

चाण्डालके वीर्यसे चर्मकारी (चमारी) के गर्भमें मांसछेदी जाति उत्पन्न हुई है ॥

कोंच ।

मांसच्छेद्यां तीवरेण कोंचश्च परिकीर्त्तितः ।

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

तीवरके वीर्यसे मांसछेदी जाति स्त्रीके गर्भमें कोंचजाति प्रगट हुई ॥

गङ्गापुत्र ।

लेटात्तीवरकन्यायां गङ्गातीरे च शौनक ।
बभूव सद्यो यो बालो गंगापुत्रः प्रकीर्त्तितः ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

हे शौनक ! लेटके औरससे गंगाके किनारे तीवरकन्यामें जो जाति उत्पन्न हुई वह बालक गंगापुत्र कहाया ॥

अन्ध्रभेद ।

वैदेहिकादन्ध्रमेदौ बहिर्ग्रामप्रतिश्रयौ ।

इति मनुसंहिता ।

वैदेहकके औरससे निषादजाति स्त्रीके गर्भमें ग्रामके बाहर रहनेवाली अन्ध्र और मेद जाति उत्पन्न हुई है ॥

म्लेच्छजाति ।

क्षत्रवीर्येण शूद्रायामृतुदोषेण पापतः ।
बलवत्यो दुरन्ताश्च बभूवुर्म्लेच्छजातयः ॥
अविद्धकर्णाः क्रूराश्च निर्भया रणदुर्ज्जयाः ।
शौचाचारविहीनाश्च दुर्द्धर्षा धर्म्मवर्जिताः ॥

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

क्षत्रियके वीर्यसे शूद्रास्त्रीमें ऋतुदोषके पापसे बलवान्, दुरन्त, कर्णवेधरहित, क्रूर, निर्भय, रणदुर्जय, शौचाचारविहीन, धर्मवर्जित, म्लेच्छजाति उत्पन्न हुई है ॥

जोला ।

म्लेच्छात् कुविन्दकन्यायां जोलाजातिर्बभूव ह ।

इति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणम् ।

म्लेच्छके औरससे तन्तुवायकी कन्याके गर्भमें जोला (जुलाहा) जाति उत्पन्न हुई है ॥

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ।
म्लेच्छत्वं च गता लोके ब्रह्मणा दर्शनेन च ॥
पौण्ड्रकाश्चौड्रद्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः ।
पारदाः पह्लवाश्चीनाः किराता दरदाः खसाः ॥

इति वर्णविवेकचन्द्रिकायाम् ।

यह क्षत्रियजातिही शनैः क्रियाके लोपसे लोकमें वेद आदिका त्याग करनेसे म्लेच्छत्वको प्राप्त हुई । पौण्ड्रक, चौण्ड्र, द्रविड, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद और खश कहाये ॥

वेदशास्त्रावमानेन स्वेच्छाचारप्रमाणतः ।
कलौ ते प्रसविष्यन्ति यवना म्लेच्छजातयः ॥
श्वेतद्वीपे स्थिता वर्णा ब्राह्मणा क्षत्रियादयः ।
वेदशास्त्रपरिभ्रष्टाः कलौ गौरुण्डसंज्ञकाः ॥
गिरिकाननदुर्गेषु निवासं चक्रिरे पुरा ।
अव्यक्तवाचिनः सर्वे धर्मकर्मबहिष्कृताः ॥
म्लेच्छा गौरुण्डकाः सर्वे भविष्यन्ति कलौ नृपाः ।
गवां च विड्वराहाणां मांसस्यास्वादने रुचिः ॥

इति वर्णविवेकचन्द्रिका ।

वेदशास्त्रके तिरस्कार और स्वेच्छाचार करनेसे वे यवनही म्लेच्छजातिके कर्ता होंगे । श्वेतद्वीपके रहनेवाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वेदशास्त्रसे भ्रष्ट होकर कलियुगमें गौरुण्ड कहावेंगे । यह प्रथम पर्वत वनोंमें निवास करते हुए वेदधर्मोंसे रहित अव्यक्त भाषा बोलते थे । कलियुगमें म्लेच्छ गौरुण्ड राजा होंगे । यह गो और विड्वराहका मांस रुचिसे भक्षण करेंगे ॥

अग्रवालस्य वीर्येण संजाता विप्रयोषिति ।
अग्रहारी कस्रवानी माहुरी संप्रतिष्ठिताः ॥
क्षत्रियस्य च वीर्येण ब्राह्मणस्य च योषिति ।
भूमिहार्य्योऽभवत्पुत्रो ब्रह्मक्षत्रस्य वेषभृत् ॥

अग्रवालके वीर्यसे ब्राह्मणकी स्त्रीमें अग्रहारी, कस्रवानी, माहुरी ये तीन पुत्र हुए । इनसे तीन जाति हुई और क्षत्रियके वीर्यसे ब्राह्मणीमें भूमिहार (भैंहार) पुत्र ब्राह्मण क्षत्रियका वेष धारण करनेवाला हुआ ॥

क्षत्रवीर्येण वैश्यायां कलवारेति नामतः ।

संजातः पतितः सोऽपि वेदधर्मबहिष्कृतः ॥

इति वर्णविवेकचन्द्रिका।

क्षत्रियके वीर्यसे वैश्यकन्यामें कलवार हुआ यहभी मद्यकर्मसे वेद्धर्मसे बाहर होनेसे पतित है। भण्डक और कलंदर ये दोनों चाण्डाल हैं। चाण्डालवत् उत्पत्ति है ॥

कश्चित् पुमान् ब्रह्मयज्ञे यज्ञकुंडात्समुत्थितः।
स सूतो धर्मवक्ता च पुराणेषु प्रकीर्त्तितः ॥

इति वर्णविवेकचन्द्रिका।

ब्रह्मयज्ञमें यज्ञकुंडसे कोई पुरुष उत्पन्न हुआ है वह सूत धर्मवक्ता पुराणोंमें कथन किया गया है ॥

वैश्यायां सूतवीर्येण पुमानेको बभूव ह।
स भाटो वावदूकश्च सर्वेषां स्तुतिपाठकः ॥

इति वर्णविवेकचंद्रिका।

वैश्यास्त्रीमें सूतके वीर्यसे एक पुरुष भाट हुआ वह वाचाल और सबकी स्तुतिपाठ करनेवाला है ॥

सुकुलीजाति।

हुगली और मेदनीपुरके निकट एक सुकली जाति कपडे बुनती है लोग इनको नीच कहते हैं परन्तु विज्ञजन इनको राजपूत सोलंकी जातिकी शाखा कहते हैं। यह विपत्तिसे अपना कर्म त्यागकर पतित हुई है। वस्तुतः यह सोलंकी जाति है। राजस्थानमें कर्नल टाडसाहबने लिखा है कि, जिस समय असुरोंने ऋषिमुनियोंके यज्ञमें विघ्न करना प्रारंभ किया उस समय ऋषियोंने असुरोंके दमन करनेको वेदमंत्र उच्चारणपूर्वक अग्निमें आहुति दी उससे चार वीर पुरुष उत्पन्न हुए। जो परमार, पुरीहर, सोलंकी और चौहान कहाये। इन्होंने असुरोंको नष्ट करके ऋषियोंकी रक्षा की ॥

इन्ही चार नामोंसे क्षत्रियोंके चार वंश विख्यात हुए हैं। सोलं-की क्षत्रिय सोलह शाखाओंमें विभक्त हैं । उनमें वघेल सर्वप्रधान और प्रसिद्ध हैं । यही भारतके एक प्रधान देशके राजा हुए जो वघेलखण्ड नामसे प्रसिद्ध हुआ ॥

जयसिंहके पुत्र मूलराज सोलंकीराजमें हुआ । यह मालवारके निकट कल्याणनगरके राजसिंहासनपर अधिष्ठित था । उसने भोजराजकी कन्याके साथ विवाह किया और पिताके राज्य कल्या-णनगरको छोडकर आनहलवारके सिंहासनपर अभिषिक्त हुआ । अट्ठावन वर्षतक उस देशका शासन करता रहा, इसकी मृत्युके पीछे इसका पुत्र चन्द्रराव पिताके सिंहासनपर आरूढ हुआ । महम्मद गजनवीके युद्धमें पराजित हो देशहीन हुआ संवत् ११५० से १२०१ पर्यन्त ५१ वर्ष सोलंकी राज्य आनहलवारके सिंहासनपर अधिष्ठित था । संवत् १२८४ ख्रिस्ताब्द और१२२८ सालमें अला-उद्दीनने आनहलवारा आक्रमण करके नष्ट भ्रष्ट किया, उस समय दिल्लीवासी तातारवंशीयगणोंने इस वंशपर वारंवार चढाई की और सम्पूर्ण स्थान चूर्णीभूत कर दिये । आदिनाथके मंदिरके निकट मसजिद बनाई, पुस्तकालय जलाये इस प्रकार तातारियोंकी भीषण चढाईसे सोलंकीजाति अपना देश परित्यागपूर्वक भारतमें चारों ओर फैल गई ॥

इसी जातिकी कई सम्प्रदाय राजचिन्हपरित्यागपूर्वक उडीसामें जगन्नाथजीके दर्शन करती निवास करने लगीं । उस समय उडी-सा वस्त्र कृषिकार्यमें विख्यात थी । इन सोलंकीगणोंनेभी वही वृत्ति अवलम्बन की । बहुत काल निवास करनेसे इनको इसी देशका भाव प्राप्त हुआ । इसी देशके अनुसार इनके आचार व्यवहार प्राप्त हुए । इनकी सोलंकी उपाधि क्रमसे भ्रष्ट होकर सुकुलीनामसे विख्यात हुई ॥

अनेक सुकुलीजातिको निकृष्ट कहते हैं परन्तु ऐसा नहीं है

कारण कि शास्त्रमें इसका लेखन नहीं है । वा जातिनिर्णयके उपरान्त यह जाति हुई है सोभी नहीं है । शास्त्रमें सभी कुछ लिख दिया है यह उच्चजाति संस्कारसे भ्रष्ट होकर शूद्रभावको प्राप्त हुई है ॥

सुकुलीजाति केवल कृषिकार्यद्वारा जीविका निर्वाह करे यह धर्मनिष्ठ और अतिथिप्रिय होते हैं । नवशायकोंकी समान यह प्रतिष्ठाके योग्य हैं ॥

इस देशमें धनकुटेमाली नामसे एक जाति प्रसिद्ध है इनके हाथका तीनों वर्ण जल ग्रहण करते हैं । यह धान कूटते और पल्लेदारी करते हैं इसी प्रकार वरवार बेलदार यहभी संकरजाति है । बेलदारोंके हाथका जल ग्रहण नहीं किया जाता ॥

रजक्यां तीवराच्चैव कोदालीति बभूव ह ।

ब्रह्मवैवर्त्त ।

रजकीमें तीवरसे बेलदार कुदालीजाति हुई है ॥

वर्णसंकरदोषेण बह्वयोऽन्याः सन्ति जातयः ।
अनुलोमविलोमाभ्यां षट्त्रिंशल्लक्षजातयः ॥

वर्णविवेकचंद्रिका ।

वर्णसंकर दोषसे औरभी बहुतसी जाति हैं । अनुलोम और विलोमसे ३६ लाख जाति होती है । इस ग्रंथमें संक्षेपसे मुख्य जातियोंका वर्णन किया है ॥

इति श्रीपण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृतजातिनिर्णयः सम्पूर्णः ।

दोहा—उन्निससै पचपन सुभग, श्रावण कृष्ण विचारि ।
शुक्रवार तिथि पंचमी, सुमरि गणेश पुरारि ॥ १ ॥
बुध ज्वालाप्रसादने, कृष्णचरण चित जाय ।
संग्रह कीनो ग्रंथ यह, पढहिं सुजन चित लाय ॥२॥
श्रीयुत गंगाविष्णुहित, जगत प्रकाशन काज ।
कियो समर्पित ग्रंथ यह, कृपा करहिं रघुराज ॥३॥
सीता लक्ष्मण भरत पुनि, महावीर हनुमान ।
करहिं सहायक नित्यप्रति, रामचंद्र भगवान ॥ ४ ॥
वसत रामगंगानिकट, नगर मुरादाबाद ।
करत भजन तहां रामको, बुध ज्वालाप्रसाद ॥ ५ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना,
कल्याण—मुंबई.

जाति.	पिता.	माता.	वृति.
अट्टालिकारक	चित्रकार	शूद्रा	घर अटारीका निर्माण करना.
अन्ध्र	वैदेहिक	निषादी	वनके पशु मारना.
अम्बष्ठ	ब्राह्मण	वैश्या	चिकित्सा करना.
आगुरी	करण	राजपुत्री	कृषिकर्म करना.
आभीर	ब्राह्मण	अम्बष्ठकन्या	गोपालन करना.
आयोगव	शूद्र	वैश्या	काठ चीरना आदि.
आवृत	ब्राम्हण	उग्रकन्या	
उग्र	क्षत्रिय	शूद्रकन्या	अपराधीका वध बंधन.
कंसकार	विश्वकर्मा	शूद्रा	पीतल कांसीके बर्तन बनाना.
कपाली	तीवर	ब्राह्मणकन्या	सनसूत्रादि निर्माण.
करण	वैश्य	शूद्रा	लेखन कर्म करना.
कर्म्मकार	गोपाल	तन्त्रवायी	लोहेका काम करना.
कलु (तैलकार)	कुम्भकार	कोटकस्त्री	तेल प्रस्तुत करना.
काण्डार	कैवर्त्त	कोंचस्त्री	
कान	जोला	हड्डिनी	गीतवाद्य.
कारावर (चर्मकार)	निषाद	वैदेहिकी	चर्मका काम करना.
कांस्यकार	ब्राम्हण	वैश्या	कांसीका काम करना.
कुक्कुटक	शूद्र	निषादी	
कुम्भकार	मालाकार	कर्मकारी	घटादि निर्माण करना.
	पट्टिकार	तैलिकी	
कुवेरी	कुम्भकार	पट्टिकारी	
कूदर	ऋषि	ब्राह्मणी	वाद्यकरणादि.
कृषिरजक	सद्गोप	रजकी	खेती कर्म.
कैवर्त्त	निषाद	अयोगवी	नौकाकर्म, सेवा,
	क्षत्रिय	वैश्या	खेती करना.
	स्वर्णकार	कुवेरिणी	
कोंच	तीवर	मांसच्छेदिनी	मछलियोंको पकडना.
कोटक	अट्टालिकारक	कुम्भकारस्त्री	घर बनाना.
कोदाली	तीवर	रजकी	बलदारी लकडी चीरना.
कोल	लेट	तीवरकन्या	भिल्लवननिवास.
गंगापुत्र	लेट	तीवरकन्या	शवादि ले जाना.
गन्धवणिक	अम्बष्ठ	राजपुत्री	गन्धद्रव्योंका बेंचना.
	ब्राह्मण	वैश्या	

जाति.	पिता.	माता.	वृत्ति.
गोप	तन्त्रवाय	मणिबन्धी	दहीदूधका व्यवसाय.
चण्डाल	शूद्र	ब्राह्मणी	घातककार्य.
चर्म्मकार	तीवर	चण्डाली	चर्मकार्य.
चित्रकार	विश्वकर्म्मा	शूद्रा	तस्बीर खैंचना.
चूर्णकार	भड़	नटी	चूर्ण प्रस्तुत करना.
जोला	म्लेच्छ	तन्त्रवायकन्या	वस्त्र बुनना.
डम (डोम)	लेट	चण्डाली	वांसके द्रव्य बनाना.
तन्त्रवाय	मणिबन्ध	मणिकारी	वस्त्र बुनना वा सीना दरजी.
ताम्बूलिक	वैश्य	शूद्रकन्या	पान बेचना तथा अनेक व्यवसाय.
तीवर	क्षत्रिय	राजपुत्री	मछली पकडना.
तैलिक	वारुजी	गोपकन्या	तेल निकालना.
दास(मार्गव)	निषाद	अयोगवी	नौकाकर्म करना.
दोल्य	तैलकार	वैश्या	पालकी उठाना.
धिग्वण	ब्राह्मण	अयोगवी	चर्मका काम करना.
धीवर	गोप	शूद्रा	मछली पकडना.
नट	रजक	शौण्डिककन्या	नृत्य गीत कला करना.
नापित	ब्राह्मण	शूद्रकन्या	क्षौरकर्म करना.
	क्षत्रिय	शूद्रकन्या	
निषाद(पारशव)	ब्राह्मण	शूद्रकन्या	मच्छोंका पकडना.
पट्टिकार	चित्रकार	गोपालिनी	प्रतिमानिर्माण.
पुक्कस	निषाद	शूद्रा	अपराधीका वध बंधन.
पौंड्रक	वैश्य	शुण्डीस्त्री	मच्छी बेंचना.
भट्ट (भाट)	क्षत्रिय	ब्राह्मणकन्या	स्तुतिपाठ करना.
भड	लेट	तीवरकन्या	
मणिकार	ताम्रकुट्ट	शंखकारी	मणिका व्यवसाय.
मणिबन्ध	मणिकार	ताम्रकुट्टी	
मागध	वैश्य	क्षत्रिया	वणिक् व्यवसाय.
मल्ल माल्ल मातव	लेट	तीवरकन्या	
मालाकार	कर्म्मकार	तैलिकी	माला रचना.
माहिष्य	क्षत्रिय	वैश्या	नृत्य गीत और सस्यरक्षा.
मूर्द्धाभिषिक्त	ब्राह्मण	क्षत्रिया	हाथी अश्व रथ शिक्षा.

जाति.	पिता.	माता.	वृत्ति.
मेद	वैदेहिक	निषादी	आरण्यपशुहिंसन.
म्लेच्छ	क्षत्रिय	शूद्रा	गर्हित कार्य.
मैत्रेय	वैदेह	अयोगवी	
मोदक	क्षत्रिय	शूद्रा	लड्डू आदि निर्माण.
मांसच्छेदी	चण्डाल	चर्म्मकारी	मांस विक्रय.
युङ्गी	वेषधारी	गङ्गापुत्रकन्या	अनेक वेष धारण बहुरूपिया.
रजक	धीवर	तीवरी	कपडे धोना धोबी.
राजपुत्र	क्षत्रिय क्षत्रिय	करणकन्या अम्बष्ठकन्या	दौत्य कर्म करना.
लेट	तीवर	तैलकारस्त्री	दस्युवृत्ति.
वागतीत	क्षत्रिय	वैश्या	मच्छी बेचना आदि.
वारुजी	गोप	तन्त्रवायी	पत्ते बेचना वारी.
वेण	वैदेहक	अम्बष्टी	भाण्डवादन भंडेले.
वैदेहक	वैश्य	ब्राह्मणी	हीजडेकी तुल्य वृत्ति.
वैद्य	ब्राह्मण	वैश्या	चिकित्सा.
व्याध	क्षत्रिय	सर्वस्विस्त्री	पशुहिंसा.
शौण्डिक	वैश्य	तीवरकन्या	सुराविक्रय करना.
श्वपच	शूद्र	ब्राह्मणी	जल्लादोंका कार्य.
शराक	जोला	तन्त्रवायकन्या	
शंखकार	गन्धवणिक ब्राह्मण	राजपुत्री वैश्या	शंख निर्माण विक्रय. मनिहार चुरिहार.
सद्गोप	क्षत्रिय	शूद्रकन्या	कृषिकार्य.
स्वर्णधिक्	अम्बष्ठ	वैश्या	स्वर्णका व्यापार करना.
स्वर्णकार	अम्बष्ठ विश्वकर्म्मा	वैश्या शूद्रकन्या	सोना चांदीका कार्य गहना बनाना.
सर्वस्वी	नापित	गोपकन्या	
सूत	क्षत्रिय	ब्राह्मणकन्या	घोडेका सारथ्य करना.
सूत्रधर	विश्वकर्म्मा करण	शूद्रा वैश्या	काठका काम और प्रतिमा गठनादि.
सोपाक	चण्डाल	पुक्कसी	वधादिकार्य.
हड्डि	लेट	चण्डालकन्या	सुअरपालन.
क्षत्ता	शूद्र	क्षत्रिया	अपराधियोंका ताडन.

नूतन पुस्तकोंकी जाहिरात.

रामविवाहकी पत्रावली	०–२
राजपुत्र पूरनमलभक्तका सांगीत ...	१–४
श्यामाश्यामविलास	०–२
लघुजातक भा० टी०	०–८
शैवमनोरंजन दोनों भाग.	०–८
संतानमंजिरी भा०टी०	०–६
संध्यावंदनभाष्य संस्कृत	०–२
अनेकसंग्रह २ भाग...	२–८
हारीतसंहिता भाषाटीका	३–०
घेरंडसंहिता भा० टी०	०–१०
महाराष्ट्रकुलवंशावली भाषाटीका ...	०–३
भोजप्रबंध भा० टी०	१–४
विवेकचिंतामणि	०–१
परीक्षाचक्रावली	०–४
दत्तकारुण्यलहरी (संस्कृत मूल) ...	०–१
पुरंजनाख्यान भाषाटीका	०–४
बृहत्संहिता भा०टी०ग्लेज ४ रु० रफ्	३–८
स्त्रीपुरुषसंजीवन भा० टी०	०–८
बिरबर अकबरका उपहास... ...	०–८
तीर्थमाला (अंग्रेजी गाइडबुककी तरह. रेलवे स्टेशनों के नाम सहित) ...	०–५
जानकी सत्सई इसमें ७०० दोहे हैं ...	०–७
अभिलाखसागर भाषामें (वेदांत) ...	२–०
अहिरावणलीला भाषा पद्योंमें ...	०–४

घरमासा … … … …	०—१
मसिसागर (शाई बनानेकी पुस्तक)	०—२
भजनरसमाल … … …	०—४
बृहत्प्रेतमंजरी भा० टी० … …	०—१०
नासिकेत भा० टी०… … …	०—८
देवीचरित्र दोहा चौपाईमें … …	०—२
जादूबंगाला … …. … …	०—१
तत्त्वप्रदीप (जातकग्रंथ) … ….	०—४
अमरकोश भा० टी० शब्दानुक्रमणिकासह	१—८
गोविंदगुणवृन्दाकर भाषा पद्यमें …	१—०
विनयपत्रिका सटीक—ग्लेज …	२—८
वियोगवैराग्यशतक भाषा … …	०—१
आल्हारामायण (आरण्यकांड) ….	०—६
हनुमानलहरी … …. ….	०—१
कैवल्योपनिषद् संस्कृत० … …	०—१
दत्तकारुण्यलहरी भाषाटीका … …	०—३
दृष्टांत पच्चीसी … … …	०—३
सूर्यकवच भा० टी० … …	०—१
तुलसीसंध्या भा० टी० … …	०—२
राधाश्यामविनोद भाषामें … …	०—२
कलीप्रपंचपच्चीसी… … …	०—१
दिल्लगीकी पुडिया प्रथम भाग .. ….	०—२
” द्वितीय भाग …	०—२
” तृतीय भाग …	०—२
” चतुर्थ भाग …	०—२
” पंचम भाग ….	०—२

मनहरणउपन्यास	०–४
लघुसिद्धांत कौमुदी भा० टी० ...	२–०
संवत्सरफलदीपिका (भाषा) ...	०–३
राजवल्लभनिघण्टु भाषाटीका... ...	१–८
संकल्पकल्पना	०–८
पंचरत्नगीता गुटका भा०टी०	१–०
ज्योतिःशास्त्रनिघण्टु	०–२
गोवर्द्धनलीला	०–३
पंचतंत्र भा० टी०	२–०
बालोद्वाहमीमांसा	०–४
स्मृतिरत्नाकर (धर्मशास्त्र.)	२–०
भक्तमाल हरिभक्तिप्रकाशिका ...	४–०
ब्रजविलास मोटा अक्षर	५–०
बहुलाव्रतकथा भाषाटीका	०–२
माघमाहात्म्य भाषाटीका	१–४
ग्रहगोचर ज्योतिष भा० टी० ...	०–२
छंदमाल	०–६

मार्गोपदेशिका (हिंदी अंग्रेजी) जो विशेषकर मिडिल परीक्षाकी अंग्रेजी और व्यवहारिक लिखने पढने और बोलनेमें उत्तीर्ण और चतुर होना चाहें उनके वास्ते अत्यंत उपयोगी है की० ८ आना ।

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना.

कल्याण–मुंबई.